श्री सीतारामाभ्यां नमः
जन्मोत्सव बधाई पदावली
राम राम
राम राम
गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर वृन्द॥

आचार्य स्वामी श्री सीताराम शरण जी महाराज
लक्ष्मणकिलाधीश

।। श्री सीतारामाभ्यां नमः ।।

जन्मोत्सव बधाई पदावली

आचार्य पीठ श्री लक्ष्मण किला

श्री अयोध्या जी, फैजाबाद

- जन्मोत्सव बधाई पदावली
  श्रीराम नवमी वर्ष, 2010

- प्रति – 2000

- प्राप्ति स्थल :
  कार्यालय श्री लक्ष्मणकिला
  श्री अयोध्या, फैजाबाद
  मो. : 9415062831

- प्रकाशक :
  स्वामी सीतारामशरण सेवा संस्थान
  श्री हनुमान धाम, श्रीकृष्ण बलराम हॉल,
  आशियाना मेन रोड, पटना – 800025
  दूरभाष : 0612–3584648

- मूल्य : 30/– (तीस रुपये)

- मुद्रक : दीपक प्रेस, तारागंज पुल,
  लश्कर,ग्वालियर फोन : 0751–2438668

।। श्री रसिकेन्द्र विहारिणे नमः ।।

भूमिका

श्री सीतारामचरणानुरागी श्रीवैष्णवों के लिए नाम-रूप-लीला और धाम का अहर्निश सेवन ही परमधर्म है। इष्ट के चरित्र का अनुस्मरण, उत्सव-समैया के माध्यम से प्रभु लीलाओं में प्रवेश की साधना आचार्यों की परम्परा रही है। इसी क्रम में उपासना निरत पूर्वाचार्यों ने प्रभु श्री राघवेन्द्र की जन्मलीला का दर्शन किया है और तत्सम्बन्धी विशिष्ट साहित्य की रचना की है। पूज्यपाद गोस्वामी जी महाराज, श्रीकृपानिवास जी, स्वामी श्री करुणा सिन्धु जी महाराज, श्री युगलप्रिया जी महाराज, पूज्य स्वामी श्री यगुलान्यशरण जी महाराज, पं. श्री जानकीवरशरण जी महाराज तथा श्री सियाअलीजी प्रभृति अनेक भावुक संत इस रीति से उपासना करते रहे हैं। पूज्य आचार्यों की यह महावाणी वैष्णव सम्प्रदाय की महत्तर सम्पत्ति है। साधक इन पदों का गान करते हुए भाव-समाधि द्वारा अपने देश-काल को विस्मृत कर प्रभु-सन्निधि के आस्वाद में डूबे रहते हैं। जन्मोत्सव बधाई के पदों का गान करते हुए मन्दिरों में जन्म महोत्सव सम्पन्न होता है। श्रीराम जी, श्री किशोरी, श्री हनुमान जी व अन्य पूवाचार्यों की बधाई युक्त यह पदावली पूर्वकाल से ही प्रकाशित होती आ रही है। इसी का यह नया संस्करण है। अनुरागीजन इससे पदों का गान करते हुए प्रभु जन्मोत्सव के उस आनन्द-सरोवर में निमज्जन कर सकेंगे जिसकी फलश्रुति बताते हुए श्री गोस्वामीपाद ने कहा है -

भरत राम रिपुदवन लखन के चरित सहित अन्हवैया।
'तुलसी' तब के से अजहुँ ज़ानिबे रघुबर नगर बसैया ।।

इस संस्करण के प्रकाशन में जिनका श्रम-सहयोग सन्निहित है। उन सभी के लिए मंगलकामन ।

श्री रामनवमी 2010 **- मैथिलीरमण शरण**

अकरादि क्रम से पद सूची

परिशिष्ट सूची

पद पृष्ठ

र

ल, व

श, स

पद पृष्ठ

ह

श्रीराम जन्म बधाई पदावली

।। श्री सीतारामाभ्यां नमः ।।
।। श्रीमते रामानन्दाय नमः ।।
।। श्रीमते युगलानन्यशरणाय नमः ।।

जन्मोत्सव बधाई पदावली

मङ्गल पद – 1

सब मिलि आवो री सजनी, मंगल गाइये ।।
रानी कौसल्या के भये सुत, बेगि बधावो जाइये ।।
आजु कैसो दिवस सजनी, बड़े भागन पाइये ।।

घसि चारु चन्दन लीपि आँगन, मोतिन चौक पुराइये ।
सात सींक सँवारि सखियाँ, बन्दनवार बँधाइये ।।

लालन मुख लखि लेउँ बलैयाँ, नैनन हियो सिराइये ।
प्राण सर्वस वारने करि, फुली अंगन माइये ।।

हिय हुती सो दृगन देखी, भयो सबन्हि मन भाइये ।
'हित' अनूप हमार जीवन, विधना तूँ चिर जाइये ।।

राग आसावरी पद – 2

आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई।
रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई।। 1

अति पुनीत मधुमास नखत ग्रह वार योग समुदाई।
हरषवन्त चर-अचर भूमिसुर, तनरुह पुलक जनाई।। 2

बरसहिं बिबुध निकर कुसुमावलि, नभ दुंदुभी बजाई।
कौसल्यादि मातु मन हरषित, यह सुख बरनि न जाई।। 3

सुनि दसरथ सुत जनम लिए सब, गुरुजन बिप्र बोलाई।
वेद विहित करि क्रिया परम सुचि, आनन्द उर न समाई।। 4

सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि, बहुविधि बाज बधाई।
पुरवासिन्ह प्रियनाथ हेतु निज, निज सम्पदा लुटाई।। 5

मनि तोरन बहु केतु पताकनि, पुरी रुचिर करि छाई।
मागध सूत द्वार बन्दीजन, जहँ-तहँ करत बड़ाई।। 6

सहज सिंगार किये बनिता चलीं, मंगल बिपुल बनाई।
गावहिं देहिं असीम मुदित चिरजिवौ तनय सुखदाई।। 7

बीथिन्ह कुंकुम कीच अरगजा, अगर अबीर उड़ाई।
नाचहिं पुर नर-नारि प्रेम भरि, देह दसा बिसराई।। 8

अमित धेनु गज तुरग बसन मनि, जातरूप अधिकाई।
देत भूप अनुरूप जाहि जोइ, सकल सिद्धि गृह आई।। 9

सुखी भए सुर सन्त भूमिसुर, खलगन मन मलिनाई।
सबै सुमन विकसत रवि निकसत, कुमुद विपिन बिलखाई।। 10

जो सुख सिन्धु सकृत सीकर ते, सिव बिरंचि प्रभुताई।
सोइ सुख अवध उमगि रह्यो दस दिसि, कौन जतन कहौं गाई।। 11

जे रघुवीर चरन चिंतक, तिन्हकी गति प्रगट दिखाई।
अविरल अमल अनूप भगति दृढ़ 'तुलसिदास' तब पाई।। 12

राग जैतश्री पद –3

सहेली सुन सोहिलो रे ।।

सोहिलो, सोहिलो, सोहिलो, सोहिलो सब जग आज।
पूत सपूत कौसिला जायो, अचल भयो कुलराज ।। 1

चैत चारु नौमी तिथि सित पख, मध्य गगन गत भानु।
नखत जोग ग्रह लगन भले दिन, मंगल मोद निधानु ।। 2

व्योम, पवन, पावक, जल, थल, दिसि दसहु सुमंगल मूल।
सुर दुन्दुभी बजावहिं गावहिं, हरषहिं बरषहिं फूल ।। 3

भूपति सदन सोहिलो सुनि, बाजैं गहगहे निसान।
जहँ–तहँ सजहिं कलस धुज, चामर तोरन केतु वितान ।। 4

सींचि सुगंध रचैं चौके गृह, आँगन गली बजार।
दल–फल–फूल–दूब, दधि–रोचन, घर–घर मंगलचार ।। 5

सुनि सानन्द उठे दसस्यन्दन, सकल समाज समेत।
लिए बोलि गुरु सचिव भूमिसुर, प्रमुदित चले निकेत ।। 6

जातकरम करि पूजि पितर सुर, दिए महिदेवन दान।
तेहि औसर सुत तीनि प्रगट भये, मंगल मुद कल्यान ।। 7

आनन्द महँ आनन्द अवध, आनन्द बधावन होइ।
उपमा कहौं चारि फल की मोहि, भलो न कहैं कवि कोइ ।। 8

सजि आरती विचित्र थार कर, जूथ–जूथ वर नारि।
गावत चलीं बधावा लै लै, निज–निज कुल अनुहारि ।। 9

असही दुसही मरहुँ मनहिं मन, बैरिन बढ़हु विषाद।
नृप सुत चारि चारु चिरजीवहु, संकर गौरि प्रसाद ।। 10

लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चले, भाँति-भाँति भारि भार।
करहिं गान करि आन राय की, नाचहिं राज-दुवार।। 11

गज, रथ, बाजि बाहिनी, बाहन सबनि सँवारे साज।
जनु रतिपति ऋतुपति कोसलपुर, बिहरत सहित समाज।। 12

घंटा घंटि पखाउज आउज, झाँझ बेनु डफ तार।
नूपुर धुनि मंजीर मनोहर, कर कंकन झनकार।। 13

नृत्य करहिं नट-नटी नारि-नर, अपने-अपने रंग।
मनहुँ मदन रति विविध वेष धरि, नटत सुदेस सुढंग।।14

उघटहिं छंद-प्रबंध गीत पद, राग तान बन्धान।
सुनि किन्नर गंधर्व सराहत, बिथके बिबुध विमान।। 15

कुंकुम अगर अरगजा छिरकहिं, भरहिं गुलाल अबीर।
नभ प्रसून झरि पुरी कोलाहल, भइ मन भावति भीर।। 16

बड़ी बयस बिधि भयो दाहिनो, सुर गुर आसिरबाद।
दसरथ सुकृत सुधा सागर सब, उमगे तजि मरजाद।। 17

ब्राह्मण वेद बंदि बिरदावलि, जय धुनि मंगल-गान।
निकसत पैठत लोग परसपर, बोलत लगि-लगि कान।। 18

बारहिं मुकुता रतन राजमहिषी पुर सुमुख समान।
बगरे नगर निछावरि मनिगन, जनु जवारि जव धान।। 19

कीन्हि बेद बिधि लोक रीति नृप, मंदिर परम हुलास।
कौशल्या कैकेयी, सुमित्रा, रहस बिवस रनिवास।। 20

रानिन दिये बसन मनि भूषन, राजा सहन भंडार।
मागध सूत भाट नट जाचक, जहँ-तहँ करहिं कबार।। 21

बिप्र-बधू सनमानि सुआसिनि, जन पुरजन पहिराई।
सनमाने अवनीस असीसत, ईस रमेस मनाई।। 22

अष्टसिद्धि नवनिद्धि, भूत सब, भूपति भवन कमाहिं।
समउ समाज राज दसरथ को, लोकप सकल सिहाहिं।। 23

को कहि सकै अवधवासिन को, प्रेम प्रमोद उछाह।
सारद सेस गनेस गिरीसहिं, अगम निगम अवगाह।। 24

सिव बिरंचि मुनि सिद्ध प्रसंसत, बड़े भूप के भाग।
'तुलसिदास' प्रभु सोहिलो गावत, उमगि-उमगि अनुराग।। 25

श्रीराम जन्म पद - 4

आजु महामंगल कोसलपुर, सुनि नृप के सुत चारि भये।
सदन-सदन सोहिलो सोहावन, नभ अरु नगर निसान हए।। 1

सजि-सजि जान अमर किंनर मुनि, जानि समय सुभ गान ठए।
नाचहिं नभ अपसरा मुदित मन, पुनि-पुनि बरषहिं सुमन चए।। 2

अति सुख बेगि बोलि गुरु भूसुर, भूपति भीतर भवन गए।
जातकरम करि कनक बसन मनि भूषित सुरभि समूह दए।। 3

दल फल फूल दूब दधि रोचन, जुवतिन्ह भरि-भरि थार लए।
गावत चलीं भीर भइ बीथिन्ह, बंदिन्ह बाँकुरे बिरद बए।। 4

कनक-कलस चामर पताक धुज, जहँ-तहँ बंदनवार नए।
भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं, सकल लोक एक रंग रए।। 5

उमगि चल्यौ आनन्द लोक तिहुँ, देत, सबनि मन्दिर रितए।
'तुलसिदास' पुनि भरेइ देखियत, रामकृपा चितवनि चितए।। 6

राग जैतश्री छठी पद –5

गावैं बिबुध विमल बर बानी।
भुवन कोटि कल्यानकन्द जो, जायो पूत कौसिला रानी।। 1

मास पाख तिथि बार नखत ग्रह जोग लगन सुभ ठानी।
जल थल गगन प्रसन्न साधु मन, दस दिसि हिय हुलसानी।। 2

बरषत सुमन बधाव नगर नभ, हरष न जात बखानी।
ज्यौं हुलास रनिवास नरेसहिं, त्यों जनपद रजधानी।। 3

अमर नाग मुनि मनुज सपरिजन, विगत विषाद गलानी।
मिलेहि माँझ रावन रजनीचर, लंक संक अकुलानी।। 4

देव पितर गुरु बिप्र पूजि नृप, दिये दान रुचि जानी।
मुनि बनिता पुरनारि सुआसिनि, सहस भाँति सनमानी।। 5

पाइ अघाइ असीसत निकसत, जाचक जन भय दानी।
यों प्रसन्न कैकयी सुमित्रहिं, होहु महेस भवानी।। 6

दिन दूसरे भूप भामिनि दोउ, भईं सुमंगल खानी।
बयो सोहिलो–सोहिलो मो जनु, सृष्टि सोहिलो सानी।। 7

गावत नाचत मो मन भावत, सुख सों अवध अधिकानी।
देत लेत पहिरत–पहिरावत, प्रजा प्रमोद अघानी।। 8

गान निसान कोलाहल कौतुक, देखत दुनी सिहानी।
हरि बिरंचि हर पुर सोभा कुलि, कोसलपुरी लोभानी।। 9

आनन्द अवनि, राजरानी सब, माँगहु कोखि जुड़ानी।
आसिष दै दै सराहहिं सादर, उमा रमा ब्रह्मानी।। 10

विभव विलास बाढ़ि दसरथ की, देखि न जिनहिं सोहानी।
कीरति कुसल भूति जय रिधि–सिधि, तिन्ह पर सबै कोहानी।। 11

छठी बारही लोक बेद विधि, करि सुबिधान विधानी।
राम लषन रिपुदवन भरत धरे, नाम ललित गुरु ज्ञानी।। 12

सुकृत सुमन तिल मोद वासि बिधि, जतन मंत्र भरि घानी।
सुख सनेह सब दियो दसरथहिं, खरि खलेल थिरथानी।। 13

अनुदिन उदय उछाह उमग जग, घर–घर अवध कहानी।
'तुलसी' राम जनम जस गावत, सो समाज उर आनी।। 14

राग बिलावल पद – 6

सुभग सेज सोभित कौसिल्या, रुचिर राम सिसु गोद लिये।
बार–बार बिधुबदन बिलोकति, लोचन चारु चकोर किये ।। 1

कबहुँ पौढ़ि पय पान करावति, कबहुँक राखति लाइ हिये।
बालकेलि गावति हलरावति, पुलकति प्रेम पियूष पिये।। 2

बिधि महेस मुनि सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट दिये।
'तुलसिदास' ऐसो सुख रघुपति पै, काहू तो पायो न बिये।। 3

राग धनाश्री पद – 7

या सिसु के गुन नाम बड़ाई।
को कहि सकै सुनहु नरपति, श्रीपति समान प्रभुताई ।।1.

जद्यपि बुधि वय रूप सील गुन, समै चारु चार्यो भाई।
तदपि लोल लोचन चकोर ससि, राम भगत सुखदाई।। 2

सुर नर मुनि करि अभय दनुज हति, हरहिं धरनि गरुआई।
कीरति विमल बिस्व अघ मोचनि, रहिहि सकल जग छाई।। 3

याके चरन सरोज कपट तजि, जे भजिहैं मन लाई।
ते कुल जुगल सहित तरिहैं भव, यह नहिं कछु अधिकाई।। 4

सुनि गुरु बचन पुलक तन दम्पति, हरष न हृदय समाई।
'तुलसिदास' अवलोकि मातु मुख, प्रभु मन महँ मुसुकाई।। 5

राग बिलावल पद – 8

अवध आजु आगमी एकु आयो।
करतल निरखि कहत सब गुन गन, बहुतन्ह परिचो पायो।। 1

बूढ़ो बड़ो प्रमानिक ब्राह्मन, संकर नाम सुहायो।
संग सुशिष्य सुनत कौसल्या, भीतर भवन बुलायो।। 2

पाँय पखारि पूजि दियो आसन, असन बसन पहिरायो।
मेले चरन चारु चार्‍यो सुत, माथे हाथ दिवायो।। 3

नख सिख बाल बिलोकि बिप्र तनु पुलक नयन जल छायो।
लै लै गोद कमल कर निरखत, उर न प्रमोद अमायो।। 4

जनम प्रसंग कह्यो कौसिक मिस सीय स्वयम्बर गायो।
राम भरत रिपुदवन लखन को, जय सुख सुजस सुनायो।। 5

'तुलसिदास' रनिवास रहसबस, भयो सबको मन भायो।
सनमान्यौ महिदेव असीसत, सानंद सदन सिधायो।। 6

पद – 9

राम जनम आनन्द बधाई।
सुरतरु कामधेनु चिन्तामनि, अवधपुरी मनो घर–घर आई।। 1

अन्तरिक्ष जनु फिरत अवनि पर, मिलत परस्पर दूब बँधाई।
प्रफुलित हृदय नगरबासिन के, बाल बृद्ध एक बात सुहाई।। 2

भई भीर नाचैं नर-नारी, बाजे बहुत गनै नहिं जाई।
सुरपुर आनन्द भयौ सबनि मन, हरषत देव पुहुप बरसाई।। 3

मंगल कलस चौक मोतियन के, द्वारन बन्दनवार बँधाई।
सिसु को बदन निहारि नारि सब, वारत भूषन लेत बलाई।। 4

रतनगर्भ कौसल्या रानी, धन्यभाग की करत बड़ाई।
दसरथराय न्हाइ भये ठाढ़े, कनक बसन धन धेनु मँगाई।। 5

परम पुनीत विप्र पद बन्दत, दान मान मनु घन बरषाई।
मागध सूत भाट बन्दीजन, अठसिधि नवनिधि वांछित पाई।। 6

देत असीस राय दसरथ को, चिरजीवहु कौसल रघुराई।
दसरतसुत हौं नित प्रति देखौ 'अग्रअली' कै यह जिय भाई।। 7

पद - 10

नृप दसरथ के पुत्र भयो, सुरपुर के बजत बधाई री।
घर-घर मंगलचार अवधपुर, बंदनवार बँधाई री।
चतुर सखी मिलि सथियाँ दीने, बिधि सो सींक भराई री।
चन्दन चौक रच्यौ आँगन में, रतननि भूमि गराई री।
करत कुतूहल कौसलवासी, याचक अभरन भराई री।
केतिक कलस धेनु संकल्पी, हस्ति समूह लुटाई री।
'अग्रअली' रघुपति के जनमत, मन वांछित फल पाई री।

पद – 11

दसरथ मन्दिर राम जनम सुनि, आये संकर जोगी।
मन तन योग साखि लाखन में, हैं आँखिन के रोगी।। 1

भुजग बिभूति-बिभूषित ससि सिर, गंग नागरिपु छाला।
अरुन नयन कर डमरू डमकत, नन्दिनि बाहन माला।। 2

अद्भुत छवि कहि सकै चितै ना, नाचत ताण्डव ताली।
दसरथ रानी लखि मुसुकानी, आनि धरी मनि थाली।। 3

सुनु माई धन चहत न मो मन, सुनु एक मेरी बानी।
तेरे लला पर फिरत बावरे खाक लपेटे रानी।। 4

डरपी रानि कहा कहे जोगी, उर में औरे हेरी।
कछु करि मन्तर बाल प्रबोधे, कहा करो तब ए री।। 5

हँसि कह योगी मातु सकुच जानि, बालक आनि देखावो।
और सकल भय की रखवारी, लै ताबीज बधाओ।। 6

तब नृप-रानी राम देखायो, सदा सुधर्म नियोगी।
'कृपानिवास' जगत से योगी, रामचरन रस भोगी।। 7

पद – 12

आजु महारानी सों झगरत, दावा करि-करि दाई।
लाग लिये बिनु नाल न खोलै, बोलै मान भराई।। 1।।

तू रानी सब देशन जानै, मैं लघु जाति लुगाई।
उमा रमा बिनु बोले डोलैं, मैं आई हूँ बोलाई।। 2।।

बालक तेरो पालक मेरो, बिधना बात बनाई।
तैं जायो सुत मातु कहायो, मैं दाई जू कहाई।। 3।।

तू प्यावैगी दूध लला को, मैं घर सुघर कराई।
तू वारैगी भूषण बस्तर, मैं तन प्राण लुटाई।। 4।।

तू मणि पालन लाल झुलावै, मैं जिवों नैन झुलाई।
तेरे मन्दिर नौबति बाजत, मेरे बजत बधाई।। 5।।

तेरे कोष सराहन लायक, मेरे हाथ भलाई।
तू दुलरावै गोद खिलावै, मैं लखि आँख जुराई।। 6।।

तो सों कहि-कहि मैया टेरै, मैं दाई जू कहाई।
तू करि लाड़ जिमावै मोदक, मैं नित करौं सहाई।। 7।।

तेरे मन आवै सुत ब्याहौं, मैं करि खोज सगाई।
तू फूले लखि पुत्रबधू मुख, मैं वारों जल राई।। 8।।

कहो सुघरि मैं कैसे हारी, नाहिन तनक घटाई।
हँसि-हँसि कहे रानी को सयानी, तेरे मन की भाई।। 9।।

और कछू चाहों नहिं सम्पति, माँगों एक अघाई।
निबहो 'निवास' राम की जाती, मैं दाई तू माई।। 10।।

पद - 13

कौशिल्या के सुवन भयो सखि, देखन को उठि धाई री।
मानिक थार भरे मंगल, सब, यूथ-यूथ सखि आई री।। 1

आरति करि पुनि करहिं निछावरि आनन्द उर न समाई री।
विविध भाँति पुर बजत बधाई, जहँ-जहँ मंगल गाई री।। 2

दशरथ द्वार राग रागिनि किधौं, ढाढ़िनि रूप सुहाई री।
वेद कर्म सब कीन्ह भूपमनि, जेहि विधि गुरुन बताई री।। 3

बंदि सूत मागध गायक बहु, जै जै बचन सुनाई री।
किधौं वेद विधि शिव किन्नर सुर, याचक वेष बनाई री।। 4

दान देत दशरथ वशिष्ठ मिलि, गज रथ मनि समुदाई री।
तुरग भूमि पट आदि दिये सब, जेहि-जेहि जो मन भाई री।। 5

बरषत सुमन देव ब्रह्मादिक, नभ दुन्दुभी बजाई री।
जय दशरथ जय जय कौशिल्या, आदि ब्रह्म सुत पाई री।। 6

कौशिल्यादि सकल रनिवासन, याचक लीन बुलाई री।
सर्वस दान दीन्ह सब काहुँहि, तिन्ह सब हरषि लुटाई री।। 7

कुम्भ कनक कदली वितान रचि, घर-घर मंगल छाई री।
उत इत अबिर अगर कुमकुम दै, गलियन्ह कीच मचाई री।। 8

कहि न सकैं श्रुति शेष शारदा, दशरथ नगर निकाई री।
निज निज पुर सुधि भूलि हरषविधि, हरिहर मन ललचाई री।। 9

असुरन्ह के घर भयो अमंगल, सुरमुनि मंगल दाई री।
'रामचरण' जै जै दशरथ सुत, जै कौशिल्या माई री।। 10

पद - 14

बाजत आजु आनन्द बधाई।।

कौशिल्या के राम जनम लियो देखहु नयन अघाई।
सब नर-नारि सुमंगल गावहिं, नाचहिं ताल बजाई।। 1

कूदहिं करहिं कलोल परस्पर, अतर अबीर उड़ाई।
लाल भयो सरयू जल शोभित, गलियन्ह कीच मचाई।। 2

बरषहिं सुमन बजावहिं नाचहिं, देत विमान बिहाई।
अवधपुरी में मंगल घर-घर, लखि ब्रह्मादि सिहाई ।। 3

अवधपुरी सब लोक एक भयो, मंगल तिहुँ पुर छाई।
कोटि काम छवि लखि दशरथ सुत, 'रामचरण' बलि जाई ।। 4

सोहर पद - 15

आजु अवधपुर मंगल घर-घर सोहिल हो।
ललना, दशरथ के भये सुवन चलहुँ सखि जोहिल हो ।। 1

कौशिल्या के सुकृत कल्पतरु फूलेउ हो।
ललना, चारि पदारथ फलेउ शम्भु अनुकूलेउ हो।। 2

त्रिभुवन परमानन्द सु जै-जै छाई हो।
ललना, बरषहिं सुर नभ सुमन सुमंगल गाई हो ।। 3

विप्र रूप धरि आयो, विधि शिव नारद हो।
ललना, उमा रमा ब्रह्माणि शची अरु शारद हो ।। 4

पढ़हिं वेद दशरथ गृह सुर तिय गावहिं हो।
ललना, बिनु चीन्हें दशरथ कौशिल्यहिं भावहिं हो ।। 5

देव अशीषहिं जय रघुवंश उजागर हो।
ललना, परम पुरुष जहँ आय सकल सुर नागर हो ।। 6

धनि दशरथ कौशिल्या धनि पुरवासी हो।
ललना, जासु भक्ति बस प्रगट ब्रह्म अविनासी हो ।। 7

सुनि-सुनि परमानन्द राउ अरु रानिय हो।
ललना, देहिं दान गज रथ हय मनि मन मानिय हो ।। 8

सब धन सबहिं लुटाय हर्ष युत सब पुर हो।
ललना, जो पावा नहिं राखि लेहिं याचक सुर हो ।। 9

मरम न जानै कोइ भरे पुनि देखहिं हो।
ललना, ब्रह्मानन्द मगन सब को केहि लेखहिं हो ।। 10

बाजत अवध बधाई भुवन चौदह भरि हो।
ललना, नाचहिं गावहिं हर्ष महामंगल परि हो ।। 11

कौशिल्या ढिग ढाढ़िनि अरुझी जाई हो।
ललना, हरषि रानि कह माँगु देउँ मन भाई हो ।। 12

देश कोट पट भूषण नहिं अभिलाषऊँ हो।
ललना, तुम्हरो सुत भरि लोचन लखि हिय राखउँ हो ।। 13

मन क्रम बचन मगन भई लखि भव मोचन हो।
ललना, जो मन वचन अगोचर लोचन गोचर हो ।। 14

विविध विनोद विलोकि थके रवि रथ युत हो।
ललना, अतर अबीर उड़ाहिं अवध छवि अद्‌भुत हो ।। 15

कनक वितान कलश कदली आदिक वर हो।
ललना, मनहुँ मदन रति रचेउ सुमंगल घर-घर हो ।। 16

करहिं वेद विधि दशरथ जस गुरु भाषहिं हो।
ललना, वेद पितर मुनि पावहिं जोइ अभिलाषहिं हो ।। 17

परमानन्द मगन दिन जात न जानहिं हो।
ललना नाम धरन गुरु आये हरषि बखानहिं हो ।। 18

जेठ सुवन जो श्याम रूप छवि आगर हो।
ललना, मदन रमइ जिहिं नाम राम सुखसागर हो ।। 19

विधि सिव सुक सनकादि भ्रमर होइ रमि रहे हो।
ललना, जासु चरन मकरन्द राम ताते कहि हो।। 20

सत चित आनन्द सिन्धु काल तिहुँ एक रस हो।
ललना, रामनाम सोइ जानब सब जाके सब हो।। 21

कर्म ज्ञान करि योग भक्ति हित रमु जहँ हो।
ललना, रामनाम ताते योगीश रमहिं तहँ हो।। 22

जो आनन्द - समुद्र तासु सीकर लहि हो।
ललना, रमउ ब्रह्म जग सत्य राम ताते कहि हो।। 23

राम नाम गुण अमित निगम नहिं जानहिं हो।
ललना, निज मति मुनि शिव शारद वेद बखानहिं हो।। 24

राम दिव्य गुण विश्व भरण पोषण जोइ हो।
ललना, महाविष्णु विश्वम्भर नाम भरत सोइ हो।। 25

धारण शक्ति जो दिव्य राम के छामक हो।
ललना, लछिमन नाम लच्छिमनि लक्षण धामक हो।। 26

सकल शत्रु नाशक शुभ शक्ति जो अद्भुत हो।
ललना, नाम शत्रुहन चारि सार श्रुति तव सुत हो।। 27

स्वयं ब्रह्म भगवान राम गृह आयउ हो।
ललना, कहि गुरु नृप तब जस ब्रह्माण्ड सोहायेउ हो।। 28

गये, वशिष्ठ निज भवन राम छवि उर धरि हो।
ललना, रानिन याचक बोलि दान दिये मन बरि हो।। 29

लेहिं राम कहँ गोद मातु हलरावहिं हो।
ललना, कबहुँ झुलावहिं पलनन्ह मंगल गावहिं हो।। 30

जेहि दिन राम जनम भयो तेहि दिन घर–घर हो।
ललना, एक–एक बालक भये सबनि के छवि वर हो।। 31

रामानन्द मगन सब मंगल गावहिं हो।
ललना, रामलला कहि–कहि हलराइ खेलावहिं हो।। 32

जे यह मङ्गल गावहिं प्रेम लगावहिं हो।
ललना, 'रामचरण' सोइ धन्य बाल रस पावहिं हो।। 33

सोहर पद – 16

वर्ष गाँठ प्रिय लाल को बाल मनावहिं हो।
ललना, जुरि–जुरि सखिन समाज सोहिलो गावहिं हो।। 1

मधुरितु अति सुख पाय छाय पुर देशहिं हो।
ललना, कामिनि हिय नवराग सु करत प्रवेशहिं हो।। 2

प्रमदावन विकसंत कंत रितुराजहिं हो।
ललना, प्रफुलित वनिता बृन्द साज शुभ साजहिं हो।। 3

फूलन बन्दनवार द्वार प्रति बाँधहिं हो।
ललना, फूलन चौक पुराय वितान तनावहिं हो।। 4

फूलन केतु पताक साथियाँ फूलहिं हो।
ललना, फूलन साज समाज देखि मन भूलहिं हो।। 5

फूल सिंगार सँवारि नारि युग लालहिं हो।
ललना, फूलन डोल सजाय तहाँ पधरावहिं हो।। 6

झूली ललना ललित कलित, गुन गावहिं हो।
ललना, नाचि–नाचि सुख राँचि सु ललन झुलावहिं हो।। 7

'कान्तिलता' तहँ फूलि पाय रसमोदहिं हो।
ललना, लालन रही रिझाय समाय विनोदहिं हो ।। 8

पद - 17

मंगलमय प्रभु जनम समय में, अति उत्तम दश योग परे।
अपने-अपने नाम सदृश फल, दशौ जनावत खरे-खरे ।। 1

ऋतुपत ऋतु पुनि आदि मास मधु, शुक्लपक्ष नित धर्म भरे।
अंक अवधि नौमी शशि वासर, नखत पुनर्वसु प्रकृति चरे ।। 2

योग सुकर्म समय मध्यम दिन, रवि प्रताप जहँ अति पसरे।
जय दाता अभिजित मुहूर्तवर, परम उच्च ग्रह पाँच ढरे ।। 3

नौमि पुनर्वसु परम उच्च रवि, कबहुँ न तीनिउ संग अरे।
एहि ते 'देव' रूप कछु लखिये, गाय-गाय गुण पतित तरे ।। 4

पद - 18

आजु नगारे की धुनि सजनी, औरहिं रंग अवाजै री।
नृप के द्वार बजत निशिवासर, आजु अधिक सुख साजै री ।। 1

पूरे दिन सब भई नृपरानी, जो कहुँ ईश निवाजै री।
होइ पुत्र पंक्तीरथजू के, पूजे सब मन काजै री ।। 2

इतने ही कोई आन कही नृप, द्वार बधाई बाजै री।
'रसिकअली' लखि मोद मगन मन, तन रोमावलि राजे री ।। 3

पद - 19

सरयू के पनिघट पै हेली, हौं अबहीं सुनि आई।
कोसलेस महिषी कौशिल्या, श्याम सुभग सुत जाई ।। 1

श्रवण सुधा सुख वचन सुनत, अनुराग रह्यो उर छाई।
कहै न कछु मुख वचन ठगी सी, रही अंग शिथिलाई।। 2

चलो अली नृप मन्दिर चलिये, सब मिलि देन बधाई।
देखिय मुख कौशल्या सुत को, लोचन को फल पाई।। 3

न्योछावर नाना विधि करिये, वारिय लोन सु राई।
पूरे प्रथम साथियाँ सजनी, चौकें चारु बनाई।। 4

बन्दनवार द्वार प्रति बाँधौ, धरो कनक घट लाई।
गौरि गणेश पूजि पुनि चलिये, मंगल सोहिलो गाई।। 5

'रसिकअली' सिख सुनी सयानी, करत चार चपलाई।
रामरूप शिशु देखन को, उत्कण्ठा उर अधिकाई।। 6

पद - 20

ढाढ़िनि निमिवंशिनि की आई।
रघुवंशिन को सुन्यो महोत्सव, लेन बधाई धाई। 1

वंश बिरिद सुनिकै कौशिल्या, भीतर बोलि पठाई।
करि सनमान बिछाई दुलैचा, आदर दै बैठाई।। 2

साठि कोटि को लहँगा बादल, सारी मोल सवाई।
साठि लाख को चोली सुन्दरि, मोतिन मणिन जड़ाई।। 3

पायन कंकन नूपुर बिछुआ, शत-शत कोटि धराई।
किंकिन हास हार उर चोकी, मोल कह्यो नहि जाई।। 4

छापा मुँदरी चूरी गुजरी, बाजूबन्दनि ल्याई।
इनके मोल कहा कहाँ लागे, कोटि हजार बनाई।। 5

करन फूल टेढ़ी झूमक धर, वीर तरौने ल्याई।
तिनको मोल कहै को जौहरि, कमला देखि सिहाई।। 6

नई नथुनियाँ टीको बिन्दी, चोटी फूल मँगाई।
इन्द्र, कुबेर, सुमेर आदि धन, भयो नहीं चौथाई।। 7

बहुत मोल की खोलि पिटारी, दीनी एक दुलाई।
पाँच पदुम की लगी किनारी, कापैं जात मोलाई।। 8

और अनेक विभूषण बस्तर, ढाढ़िन तब पहिराई।
घोड़ी हथिनी माल भराई, सो सुखपाल चढ़ाई।। 9

सकुचि कह्यो थोरी कछु दीन्हों, तुम्हरे लायक नाईं।
बरजों तेहि जनकरानी को, यह जनि दान दिखाई।। 10

प्रेम मगन बोली ढाढ़िनि तब, तुमसे यह बनि आई।
काहे न होइ नवनि दशरथ की, घरनि राम की माई।। 11

हमरे कूँ कुछ आस बड़ी है, जौ शिव कहैं सुहाई।
आऊँगीं मैं फेरि तिहारे, लाऊँगी जु सगाई ।। 12

शीश नवाइ चली ढाढ़िनी तब, राम लिये दृग लाई।
'कृपानिवास' द्वार तें निकसी, सम्पति सकल लुटाई।। 13

वाह-वाह का भाट का पद - 21

आज उनमादियाँ वे बधैया देत श्री भूपाल।
जायो सुत राम लोना हो सलोना श्यामला अरु लाल।।

रावल शादियाँ हो कहैं रयजादियाँ कुलरीत।
वारें लोन राई हो सखी सब गावें मंगल गीत।।

सखी सब मंगल गावैं, गुनी मिल चुहल मचावैं।
बजावैं डीमक झाँझा, मजे से गावत माँझा ।।
लाल के सदके जाऊँ, कुँवर पर घोल घुमाऊँ ।। 1

निशदिन लेउँ बलैयाँ हो बड़े खाड़ेश सुन्दर जाय।
रहो नित रंगरलियाँ हो लड़ावो लाड़ दशरथ लाल ।।

करो दिन राति जापा हो खशीदे खाश दे खुलवाय।
खुलाया खास खजाना लुटाया माल अमाना ।।

भरे पुनि भये न रीते, गुनी सब भये निचीते।
फिर वे कहूँ न नच्चे, 'बृजनहुँ' से सच्चे ।। 2

रेखता पद – 22

बधाई अवधेश के बाजै। मनो घन गहगहे गाजैं ।।
गुनी गन्धर्व जुरि आये। दान मन भावते पाये ।।
मलिनियाँ माल गुहि लाई। नाइन हरी दूब बँधवाई ।।
सुवासिनि सोहिलो गावैं। लला के वारने जावैं ।।
सखी सथियाँ सँवारे री। बिरद बन्दी उचारें री ।।
पढ़त द्विज बेद वर बानी। धन्य महाराज महरानी ।।
यहै छवि देखि सब हरषैं। सुमन बहु ब्योम ते बरषैं ।।
असीसैं देत नर नारी। 'रसिकगोविन्द' बलिहारी ।।

रेखता पद – 23

चलो सखी हरषतावल में। भये सुत राज रावल में ।।
मगन रस हँसत खेलो री। गावोंगीं राम सुहेलो री ।।

सजो जी सात स्वाँगन में। नचौंगी राय आँगन में।।
करौंगी प्रेम की सैलें। उघारें आजु मन मैलें।।
परें सुखसिन्धु में गहिरें। उठें जहँ रंग की लहरें।।
खड़े अनुराग झूलैं री। खुशी के बाग फूलैं री।।
लखो री प्राण पालन को। खेलावो गोद लालन को।।
'कृपानिवास' के प्यारे। अवधपुर राय के बारे।।

रेखता पद – 24

सुनो री नौबते बाजें। मनो सावन के घन गाजैं।।
नचैं पुर सुघर कामिनि सी। दमक तनु चपल दामिनि सी।।
बनी छवि धूप धूमन की। मनो घटा श्यामलूमन की।।
बरषि सुर सुमन मन मोहैं। सुभग बगमाल सी सोहैं।।
खुशी के बरस पानी री। हरे जहँ राय रानी री।।
भरे मन रसिक सागर से। उपासक राम नागर से।।
बढ़ी अब प्रीति की नदियाँ। उखर बहि कूल फुलबगियाँ।।
'कृपानिवास' मन मछियाँ। अवधपुर सादियाँ अछियाँ।।

पद – 25

रघुलाल पालने झूलैं। लखि मातु मुदित मन हूलैं।।
अरुण कमल कर चरण विलोचन आनन छवि सुख मूलैं।।
श्याम बरन तन पीत झिंगुलिया भूषण अँग अनुकूलैं।।
बालकेलि मृदु गाइ सुनावति अम्ब हरन भव सूलैं।।
'अग्रअली' सुनि मुनि–मन हरषत बरषत सुरतरु फूलैं।।

पद – 26

मातु सन माँगत ससि रघुलाल ।।
ठन गन करत अरत हठि रोवत लखि नभ नयन विशाल ।
अम्ब भुलावति देइ खिलौना कोकिल–कीर–मराल ।।
मानत नाहिं अगम दरसायो कर गहि दर्पण हाल ।
'अग्र' हँसे लखि कोटि चन्द सम निज आनन छवि जाल ।।

छठी पद – 27

चुपरि उबटि अन्हवाई कै नयन आँजे,
रचि–रचि तिलक गोरोचन को कियो है ।
भ्रू पर अनूप मसिबिंदु, बारे–बारे बार,
विलसत सीस पर हेरि हरै हियो है ।। 1
मोद भरी गोद लिये लालति सुमित्रा देखि,
देव कहैं सबको सुकृत उपवियो है ।
मातु पितु प्रिय परिजन पुरजन धन्य,
पुन्य पुंज पेखि–पेखि प्रेम रस पियो है ।। 2
लोहित ललित रघु चरन कमल चारु,
चाल चाहि सो छवि सु कवि जिय जियो है ।
बालकेलि बात बस झलकि झलमलत,
सोभा की दीयटि मानो रूप दीप दियो है ।। 3
राम सिसु सानुज चरित चारु गाइ सुनि,
सुजनन सादर जनम लाहु लियो है ।

'तुलसी' बिहाइ दसरथ दसचारि पुर,
ऐरे सुख जोग बिधि बिरच्यो न बियो है।। 4

पद 28

पगनि कब चलिहौं चारौ भैया।
प्रेम पुलकि उर लाइ सुवन सब कहति सुमित्रा मैया।।
सुन्दर तनु सिसु बसन बिभूषन नखसिख निरखि निकैया।
दलि तृन प्रान निछावर करि-करि लैहैं मातु बलैया।।
किलकनि नटनि चलनि चितवनि भजि मिलनि मनोहरतैया।
मनि खंभनि प्रतिबिम्ब झलक छवि छलकिहैं भरि अँगनैया।।
बाल बिनोद मोद मँजुल बिधु लीला ललित जुन्हैया।
भूपति पुन्य पयोधि उमग घर-घर आनन्द बधैया।।
हैहैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया।
अनायास पाइहैं जनम फल तोतरे बचन सुनैया।।
भरत राम रिपुदवन लखन के चरित सरित अन्हवैया।
'तुलसी' तब के से अजहुँ जानिबे रघुबर नगर बसैया।।

पद - 29

ललना लोने लेरुआ बलि मैया।
सुख सोइए नींद बेरिया भई चारु चरित चार्‌यो भैया।। 1
कहति मल्हाइ लाइ उर छिन-छिन छगन छबीले छोटे छैया।
मोद कंद कुल कुमुद चन्द्र मेरे रामचन्द्र रघुरैया।। 2
रघुबर बालकेलि संतन की सुभग सुभद सुरगैया।
'तुलसी' दुहि पीवत सुख जीवत पय सप्रेम घनी घैया।। 3

राग कान्हरा पद – 30

ललित सुतहि लालति सचु पाये।
कौसल्या कल कनक अजिर महँ सिखवति चलन अँगुरिया लाये।।

कटि किंकिनी पैजनी पायनि बाजति रुनझुन मधुर रँगाये।
पहुँची करनि कंठकठुला बन्यौ केहरिनख मनि जरित जराये।।

पीत पुनीत बिचित्र झँगुलिया सोहति श्याम शरीर सोहाये।
दँतियाँ युगल मनोहर मुख छबि अरुन अधर चित लेत चोराये।।

चिबुक कपोल नासिका सुन्दर भाल तिलक मसिबिंदु बनाये।
राजत नयन मंजु अंजनजुत खंजन कंज मीन–मद नाये।।

लटकन चारु भृकुटिया टेढ़ी–मेढ़ी सुभग सुदेश सुभाये।
किलकि किलकि नाचत चुटकी सुनि डरपति जननि पानि छुटकाये।।

गिरि घुटुरुवनि टेकि उठि अनुजनि तोतरि बोलत पूप देखाये।
बालकेलि अवलोकि मातु सब मुदित मगन आनँद न अमाये।।

देखत नभघन ओट चरित मुनि जोग समाधि बिरति बिसराये।
'तुलसीदास' जे रसिक न एहि रस ते नर जड़ जीवत जग जाये।।

राग ललित पद – 31

छोटी–छोटी गोड़ियाँ अँगुरियाँ छबीली छोटी,
नख जोति मोती मानो कमल दलनि पर।
ललित आँगन खेलैं ठुमुक–ठुमक चलैं,
झुँझुनु–झुँझुनु पाँय पैजनी मृदु मुखर।। 1

किंकिनी कलित कटि हाटक जटित मनि,
मंजु कर कंजनि पहुँचियाँ रुचिरतर।
पियरी झँगुली झीनी साँवरे सरीर खुली,
बालक दामिनीं ओढ़ी मानो बारे बारिधर।। 2
उर बघनहा कंठ कठुला झँडूले केश,
मेढ़ी लटकन मसिबिंदु मुनि मनहर।
अंजन रंजित नैन चित चोरै चितवनि,
मुख शोभा पर वारौं अमित असमसर।। 3
चुटकी बजावती नचावती कौसल्या माता,
बालकेलि गावती मल्हावती सुप्रेम भर।
किलकि-किलकि हँसैं द्वै-द्वै दतुरियाँ लसैं,
'तुलसी' के मन बसैं तोतरे बचन बर।। 4

पद - 32

कौशल्या रानी तुम सम कौन सपूती।
करी कमाई मन की भाई नेक न माया धूती।।
गोपुर स्वामी गोद खिलावै भक्ति लगाई दूती।
'कृपानिवासी' मधुरी बैना गावत मैना तूती।।

पद - 33

चलायो रानी परमेश्वर पर टोना।।
बेदन गायो पार न पायो जायो श्याम सलोना।
योगी योग साधना हेरैं तेरे खेल खेलौना।।

भयो नहीं न होइहैं काहू के बिना प्रेम कहाँ होना।
'कृपानिवास' सनेहिन के बस कौसिल्याजू के छौना।।

पद – 34

महराजा अवधेश के सुनु सोहिलरा।
बजत बधाई आज मेरा मन मोहिलरा।।
जनमें पुत्र सुपुत्र हैं सुनु। अचल भयो कुलराज मेरा।।
नपृति दान बहुतेक दिये सुनु। गउवें अरुगज बाजि मेरा।।
मालिनियाँ आजु फूली फिरैं सुनु। बाँधति बन्दनवार मेरा।।
धरति सुवासिनि साथियाँ सुनु। गावति मंगलचार मेरा।।
'कृपानिवास' को दीजिये सुनु। महरानी गरे को हार मेरा।।

पद – 35

जा दिन नहाय बैठों राम लैके कनियाँ
दैहौं मनि मानिक विभूषण विचित्र तोकों।
हरी–हरी साड़ी तामें जरद किनारी लागी।
बादल के झब्बे लागे तास की फुँदनियाँ।।
फूली न समैहों मुख मोरिहौं न काहू पै
ऐसो बनाऊँ जैसे राजन की रनियाँ।
'रतनहरी' नख सिख लौ गहनो
हीरा मनि मानिक सो जटित नथुनियाँ।

पद – 36

कौसिल्या मैया चिरजीवो तेरा छौना।
राज समाज सकल सुख सम्पति अधिक–अधिक नित होना।।

मुनि जन ध्यान धरत निसिवासर अमित जन्म धरि मौना।
'रतनहरी' प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना।।

पद – 37

लाल को देखन चलो माई।
उमगत हिय आनन्द अनूपम कौसिल्या सुत जाई।।
गजमनि चौक रची पुर बनिता मंगल कलस धराई।
बन्दनवार द्वार प्रति बाँधत ध्वज पताक छबि लाई।।
गलियन कीच अरगजे माची धूप धूम नभ छाई।
'रसिकअली' नाचत सुरबनिता कुसुममाल बरषाई।।

पद – 38

पलना नीको बनो री माई।
पाँय ढोलनी पुतरी बड़ेरा, झूमक अति छवि छाई।। 1
लागैं ललित पलकिया सुन्दर वेतस केर बनाई।
'रसिकअली' दशरथ सुत झूलत मातु कौशल्या देत झुलाई।। 2

पद – 39

बधाई प्यारी बाजे नीकी।
अवधराज अभिलाष साज सत सोभित सहस अमी की ।।
सदन–सदन सुख सहज अलौकिक भावन सत जन जी की ।
श्रवन सुनत सरसत अनुपम मुद मानस अकथ अधी की ।।
श्री रघुवंश विमल बरधन जस प्रगट भयो अवनी की ।
'युगल अनन्य' निछावर मन धन समय सोहावन ही की ।।

पद - 40

बधाई बाजि हरी, हेरो-हेरो अवध उत्साह।।
होत हजारन हरष हिये सुभ सदन-सदन चित चाह।
दुति दामिनि भामिनि गावैं गुन भरि-भरि रंग उछाह।।
कोउ काहू की सुधि न सम्हारत छकि-छकि नाह-निगाह।
'युगलअनन्यअली' हुलसत उर दुरत दरद दिल दाह।।

पद - 41

बधाई मौजमयी, बाजे-बाजे अवध चहुँओर।।
कहों कहा मुख एक मन्दमति विथकित सुकवि करोर।
बरसत सुरभि समूह गलिन बिच मची मनोहर शोर।।
सर्वस दान देहिं पुरजन प्रिय पल-पल प्रेम हिलोर।
'युगलअनन्यअली' गावत गुन अंग-अंग-रँग बोर।।

पद -42

प्रियपुर चहुँओर बाजे रसीली बधावनियाँ।
नौमी तिथि मधुमास मनोरम मंगल दिन छवि छावनियाँ।।
श्री रघुराज सुवन मोहन मन प्रगटे भूमि सोहावनियाँ।
'युगलअनन्यशरण' रसिकन की भलीभाँति भई भावनियाँ।।

पद - 43

रघुवर की बधाई गावो, प्रिय पावो सरसावो मोरे रामा हो।।
सुनि के सोहिलो सोहन, छोहन छजवावो मोरे रामा हो।
तन-मन निवछावर करिके, दृग रस बरसावो मोरे रामा हो।।

भूपति मनि सुवन सलोनो, छवि हेरि हेरावो मोरे रामा हो।
'श्री युगलअनन्य' छनहिं छन, सुखसिंधु समावो मोरे रामा हो ।।

पद – 44

उर उमगि बधाई बाजै।
अति अपार नृपद्वार चहूँदिसि मनहुँ सुभग घन गाजै ।।
भये प्रगट नृप सुवन सोहावन मनभावन दुख दोष नसावन,
श्री रघुवंस तिलक कुल दीपक मदन कोटि छवि लाजै ।।
सुनि–सुनि भवन–भवन ते भामिनि कामिनिकला कुशल दुतिदामिनि,
चलीं हरषि उर कनक थार भरि सजि–सजि मंगल साजै ।।
वीणा वेनु शंख शहनाई सरसाई नौबति सुखदाई,
मंगल गानन गाय नाचि तूम, तननननन गति छाजै ।।
'ज्ञानाअलि' पताक ध्वज चामर कनक कलश चौके रचि आगर,
बन्दनवार द्वार प्रति राजै कौशिल्या सुत काजै ।।

पद – 45

लैहों नेग मैं कर को कँगनवाँ ।।
महरानी बिनती सुनु मोरी, सुखी रहैं तेरो चारों ललनवाँ।
रामलला के निछावर लैहों, और कछू नहीं मोहिं चहनवाँ ।।
गाय बजाय रिझाय मजे से, ढाढ़िन मचली भूप अँगनवाँ।
'मधुरअली' हँसि देत निछावर, राम मातु मनमोद मगनवाँ ।।

पद – 46

राम जनम सुनि के ढाढ़िनियाँ अपने पति सों बोली।
चलहु कन्त राजा दसरथ गृह दान कोठरी खोली ।।

तोहि मिलै बागो अरु पागो मोहिं पहिरन को चोली।
तोहि मिलै घोड़ा अरु जोड़ा मोहिं चढ़न को डोली।।
अवध नगर पिया बास करन को मँगिहौं एक हवेली।
'तुलसीदास' रघुनाथ याँचि के छोरि धरब निज झोली।।

पद – 47

बधाई देन चलो वारी–वारी।
कौशल्या कैकई सुमित्रा जनमायो सुत चारी।।
अस अवसर फिरि बहुरि न पैहो धनि निज भाग विचारी।
'श्रीरघुराज' निरखि लालन मुख पुनि–पुनि लै बलिहारी।।

चैती पद – 48

बाजत अवध बधैया हो रामा, भये रघुरैया।
चैत चारु नौमी मंगल मधि दिवस प्रमोद बढ़ैया हो रामा।
सकल भाँति जित अभिजित अति प्रिय जन दुख फंद नसैया हो रामा।।
प्रीति–प्रतीति रीति अविगीतहिं पावन गीत गवैया हो रामा।
प्रेमलता लहराय प्रभा लहि अभिमत फल सुफलैया हो रामा।
श्री गुरुकृपा कटाक्ष ललित प्रभु हिल मिलि सुख सरसैया हो रामा।

पद – 49

न लैहों महरानी जू कर कँगना।।
बहुत दिनन की आस लगी है सो दिन पहुँचो आनी जू।
श्रीरामलला को निछावरि लैहों जो हमरे मन मानी जू।।
गले को हार कौशल्यारानी दीन्हीं तब ढाढ़िनि मुसुकानी जू।
'रामदास' की आस यही है महल टहल मनमानी जू।।

पद – 50

बाजत आनन्द बधैया हो रामा, अवध नगर में।
राजा दशरथजी के चारि पुत्र भये श्याम गौर छवि छइया हो रामा।।

राम लखन श्री भरत शत्रुहन नाम ललित सुखदइया हो रामा।
त्रिभुवन में उत्साह भयउ अति, 'प्रेममोद' अधिकइया हो रामा।।

पद – 51

नृप आँगने में खेलत रामलला।
बागन काग खिलौना मणिमय प्रतिबिम्बनि लखि नटनिकला।
संग भरत रिपुसूदन लछिमन उपमा योग न चारिउ फला।।
देव सुमन बरसत छवि निरखत मानत अतिसय भाग भला।
'दिव्य' अखण्ड विहार एक रस राग ताल रसकेलि कला।।

पद – 52

चलो री सखी देखि आवैं प्यारे रघुरैया।।
घर-घर बन्दनवार पताका बरनि न जाय निकैया।
पुर नर-नारि मगन होय गावें घर-घर बजत बधैया।।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सुन्दर चारों भैया।
कौशल्या कैकयी सुमित्रा पुनि-पुनि लेत बलैया।।
सुर-नर-मुनि जय-जयकार करत हैं बरसत सुमन निकैया।
श्री दशरथ जू के आँगन में नाचे 'मस्त' गवैया।।

पद – 53

सदा शुभ होवे जनम की घड़ी।।
माई कौशल्या की कोख सिरानी गोद खेलावें मोद भरी।
राजा लुटावें अन्न धन सोनवाँ रानी लुटावें मोतियन की लड़ी।।
द्वार–द्वार प्रति नौबत बाजे मालिनियाँ लिये माल खड़ी।
सुर नर मुनि जय जयकार करत हैं 'मस्त' झरत फुलवन की झड़ी।।

पद – 54

बधाई बाजि रही घन घोर।
दशस्यन्दन के चारि सुवन भये दुइ श्यामल दुइ गोर।।
महल–महल प्रति नौबत बाजे मच्यो आनन्द को शोर।
चन्द्रमुखी मृगनयनी गावैं जस कोकिल बन मोर।।
पुरवासिन की दसा बिसरि गई नहिं जानत निसि–भोर।
'सियाअली' श्री अवध नगर में रहि गयो मोर न तोर।।

पद – 55

बधैया बाजै आँगन में।
चन्द्रमुखी मृगनयनी अवध की तोरन तानन रागने में।
प्रेमभरी प्रमदागन नाचैं नूपुर बाँधे पायने में।।
न्यौछावर श्रीरामललाजू की नहिं कोउ लाजत माँगने में।
'सियाअली' यह कौतुक देखत बीती रजनी जागने में।।

चैती पद – 56

लखि–लखि बारे ललनवाँ हो रामा, अँखियाँ सुफल भई।
घुँघराली काली–काली लटुरिया सोभित कमल नयनवाँ हो रामा।

किलकि रहे रानी जी के कोरवा भावत मन्द हँसनवाँ हो रामा।
धनि-धनि भाग हमन्हि को सजनी, चूमति मन को हरनवाँ को रामा।।
महरानी युग-युग जीवैं तेरो, सुन्दर स्याम बरनवाँ हो रामा।
'सियाअली' अब नित हम अइबै, देखन सुख के सदनवाँ हो रामा।।

पद - 57

बाजत आनन्द-बधइया हो रामा, अवध नगरिया।
बहुत दिनन की आस सबन की बिधिना आज पुजइया हो रामा।
प्रगट भये महराज महल में त्रिभुवन को सुखदइया हो रामा।।
कोइ नाचति कोइ गावति हिलमिल प्रमुदित लोग लुगइया हो रामा।
'सियाअली' किये प्रान निछावरि निरखत मुख रघुरैया हो रामा।।

छठी पद - 58

आई-आई छठी दिन आज रजनी प्यारी सखी।
मंगलगान चहुँदिशि छाई लागी नौबति बाज।।
बेगि चलो री राजमहल को लै-लै आरति साज।
पूछत छठी गोद लै लालन रानी युत महाराज।।
पीत बसन लालन तन शोभित भाल दिठौना भ्राज।
'सियाअली' तहँ कमल नयन में दीनो काजर आँज।।

पद - 59

सखी री श्री महलन के बीच बरसि रही प्रेम घटा घनघोर।।
हिलि-मिलि हरषि-हरषि हिय हेली, नाचैं नई-नई नाच नवेली।
चारहुँ ओर चलीं दृग खंजन दै अंजन की कोर।।

रानिन मोतियन चौक पुराये, पूजन कलश सखिन धरवाये।
मंगल गावहिं सुरन्ह मनवाहिं गहि अंचल की छोर।।
सुरगन बैठि विमान पधारे, बरसत सुमन बजाय नगारे।
रामजन्म उत्सव को आली, भयो त्रिभुवन में शोर।।
धन्य अवध के नर अरु नारी, महल-टहल के जे अधिकारी।
जोर-जोर दृग जोर 'बिहारी' प्रभु चरणन की ओर।।

पद - 60

सब मोद मनावैं मन में राजन गृह लालन जनमे।
अनमोल रतन बिछि भूमि रहे, हीरन के तोरन झूमि रहे,
मलसाऊ जरे कलशन में।। राजन....
नर नारी आवत जावत हैं, मणि माणिक लाल लुटावत हैं,
सब धनपति ह्वै रहे धन में।। राजन....
फूलन की मग-मग महक मची, ऋतुपति ने रचना रुचिर रची,
बागन-बागन बन-बन में।। राजन....
दई आज्ञा अवधबिहारी ने, पायो अधिकार 'बिहारी' ने,
अब चित लागो चरणन में।। राजन....

पद - 61

रघुकुलमणि श्रीराम चढ़े कौशल्या कैयाँ।
पीत झिंगुलिया अंग फिरत कबहूँ घुटनैयाँ।।
कच घुँघरारे शीश चौतनी अनूप रूप।
बघनखहा शुभचन्द चारु ग्रीवा बिच महियाँ।।

रतन जड़ित चूड़ा सोहैं कटि करधनी।
पग घुँघुरू अनमोल बजत रुनझुन झनकैया।।
होत मनमोद मातु देखि-देखि श्याम गात।
धावत जननी ओर डरत लखि निज परिछैयाँ।।
चारों भैया खेलैं खेल आँगने में दौरि-दौरि।
दरशन हेत 'रमेश' लेत मन जी ललकैयाँ।।

पद - 62

चलन सिखावे मातु ललन की गहि कर बहियाँ।
निरखि मनोहर रूप चूमि मुख लेत बलैयाँ।।
रँग-रँग फूल गूँथे केश घुँघुराले ऐन,
श्याम छटा नील घटा सोहैं रतनारे नैन,
जगमग मणियन माल दामिनी सी लुरकैयाँ।।
सिंहनख नीलमणि कण्ठ में कमंक हैं,
मोती जड़ी किंकिनी की नीकी सी चमंक है,
पीत झिंगुलिया लसत उड़त लेवे लहरैयाँ।।
भूमि पाँव धरे बजे घुँघरू सो छूम-छूम,
गोदी बीच आवें राम अँगना में घूम-घूम,
चलत-चलत गिरि परत उठावें मैया कैयाँ।।
बालकेलि करें प्रभु मग्न होत मातु हैं,
देख-देख आनन्द सों फूली न समात हैं,
'हरिहर' दरशन हेत लेत लोचन ललकैयाँ।।

पद – 63

ठुमुकि–ठुमकि पग चाल निरखि जननी सुख पावें।
गिरत–उठत फिर चलत राम हँसि सबहि रिझावें।।

बाल सुकुमार धाय भूप ढिग जाय–जाय,
बोलैं तुतरे बैन नृपति लै कण्ठ लगावें।।

मेवा पकवान आनि खावें सब भ्रात संग,
चैंया–मैयाँ नाच चौक में खेल रचावें।।

आनन्द अपार लेत मातु सब हेरि–हेरि,
कह–कह अइता कन्त अँगुरियन पास बुलावें।।

हँसें देखि बार बहू लियो गोद में उठाय,
बार–बार मुख चूमि लाल पलना पौढ़ावें।।

सोइबे के काज गीत गावतीं दराज सब,
सो जा बारे बीर झूलना झमकि झुलावें।।

पावतीं आनन्द मातु नन्द रामचन्द देखि,
निश दिन दीन 'रमेश' दरश हित चाह बढ़ावें।।

पद – 64

चन्दा माँगें राम लला।

ठुमुकि–ठुमुकि माता ढिग जावैं, छिन–छिन खीझैं और खिझावैं,
करि–करि के उकला।। चन्दा.

कौशल्या के वारी–वारी, खीचैं सारी कबहुँ किनारी,
कबहूँ तानैं अँचला।। चन्दा.

को जाने कैसे ललचावैं, हेरि अकासै पास बुलावें,
हौले हाथ हला।। चन्दा......
कहो कहाँ तक 'रसरँग' भासे, देखें लीला देव अकासे,
कहि-कहि भला-भला।। चन्दा......

पद - 65

चलो री सब देखि आवैं बाजत बधैया।।
कौशल्या-सुख सुकृत-सिन्धु से रामचन्द्र प्रगटैया।
हर्ष हिलोर उमगि दश दिशि में अग-जग मगन करैया।।
अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह योग वार समुदैया।
मध्य दिवस में प्रगट भये हैं, सबहिन के सुख दैया।।
सुनि दशरथ नृप खोलि खजाने मंगन तृपित करैया।
लाल निछावरि वसन लुटावहिं भूषण मणिन जरैया।।
सदन-सदन से चलीं सुवासिनि मंगल थाल सजैया।
गावहिं गलिन लाज बिसरावहिं नाचहिं ता ता थैया।।
शिशु-मुख निरखि हरषि तृण तोरति कोइ सखि लेत बलैया।
ललन 'कान्ति' दश दिशा प्रकाशित मानो शरद जोन्हैया।।

राग काफी पद - 66

मलिनियाँ बाँधो री बाँधो री बन्दनवार।
रानी कौशल्या ढोटा जायो गावो री गावो री मंगलचार।
सजि नवसप्त सबै मिलि भामिनि साजो री साजो री मंगलथार
'मधुपअली' मुख निरखि लला को तन-मन-धन सब वार।।

राग काफी पद – 67

माँ आनन्द मंगल गावो री, दरस परस सुख पाओ गुन गावो।
धीं धा धुम किट क्राण क्राण ता थेई
ता थेई नि नि ध ध नि म प दरसा बीन बजावो।।
आज लालकी बरसगाठि ह री, सुनि–सुनि मोद बढ़ाओ सुख पाओ।।
'श्यामदास' दृगभरि रसलीजै री, नैन सो नैन मिलावो सुख पावो।।

राग भूपकल्याण ध्रुपद – 68

बन्दनवार बाँधो री मलिनियाँ।
यहि घर में महारानी सुत जायो मेरो मन मगन भयो री।।
साज साथियाँ मंगल गावो तोरन अलियाँ बँधावो।
शुभ घरी शुभ दिन महूरत योग लगन साधो री।।
'कान्हरदास' अति आनन्द सुनिये सकल साधो री।
श्री अवध आनि प्रगट भये जगत जीवन राघो री।।

ध्रुपद – 69

बीन लिये नारद पितामह सारंगी लिये,
मारुत सितार मुरचंग लिये शेष हैं।
ताल लिये वरुण कुबेर करताल लिये,
झाँझ लिये पवन मृदंग अमरेश हैं।
गावैं गुण सनक सनन्दन गणेश,
उनचास कोटि तान लेत चन्द्रमा दिनेश हैं।
'लाल' कहैं अवध में दशरथजू के लाल भये,
झूमि–झूमि सभा मध्य नाचत महेश हैं।।

श्री जानकी जन्म बधाई पदावली

मंगल पद – 1

मंगल गावो री हेली मन के भावने।
मिथिलापति केरी हेली शंकर दाहिने ।।

छन्द – दाहिने विधि शम्भु अमृत बरषिये वर्षा भली।
जनक सुकृत भरे सागर सीय पंकज की कली ।।
प्रफुल है दिन बढ़ो सुयश निवास कीरति संग चली।
अवध–बन ते भँवर आवैं राम रसिया वर लली ।। 1

मंगल गावो री हेली दिन–दिन चौगुने।
भाग सिहावो री हेली सब मिलि आपने ।।

छन्द – आपने बड़भाग जानो लागि सिय पद सब रहैं।
जानि अपनी बालपन ते बर मिले बहियाँ गहैं ।।
यह संग सब दिन सुलभ सजनी लली सेवन जो चहैं।
बढ़ो सरस सोहाग स्वामिनि सहचरी पद हम लहैं ।। 2

महिमा गावो री हेली सुनैना भाग की।
उमही है री हेली बेलि सुहाग की ।।

छन्द – उमही सुबेलि सोहाग की बर बाम कोखि सुहावनी।
अनुराग जल सों लागि पाल्यौ सुरति मालिनि भावनी ।।

यह छाँह टेक बढ़ाय मूरति लता ललित लुभावनी।
फूल है करि माल दशरथलाल गर पहिरावनी।। 3
चौक पुरावो री हेली सोहिलो गाइये।
जनम लख्यो है री हेली ब्याह मनाइये।।

छन्द – उर चाह धरिये ब्याह की बर राम आवें पाहुने।
यह लाहु हमको भूप प्रण हित शम्भु चाप तुरावने।।
सियराम मण्डप ललित भाँवरि समय सरस सोहावने।
यह आस 'कृपा निवास' उर की विपुल मंगल गावने।। 4

राग जैतश्री पद – 2

अखिल लोक श्री उदय भई हैं, जनकराय पुर जाई।
निरवोपम कन्या निमिकुल की सीता ऐसे नाई।। 1
बरनत बिदुष पार नहिं पावत वाणी रही लजाई।
जाके चरण कमल भव नौका नाहिन आन उपाई।। 2
निगम सार सम सुयश जाहि को कहत तपोधन आई।
ब्रह्म रुद्र अजहूँ पद आश्रित 'अग्रअली' बलि जाई।। 3

पद – 3

आजु महा मंगल मिथिलापुर घर–घर बजत बधाई री।
कुँवरि किशोरी प्रगट भई हैं, सबहिन की सुखदाई री।। 1
ताही दिन ते जनकपुरी में गृह–गृह सम्पति आई री।
द्वारे–द्वारे बन्दनवारे आँगन आनन्द छाई री।। 2
चढ़ि विमान सुर कौतुक देखहिं नभ दुन्दुभी बजाई री।
जनकलली को सोहिलो गावत पुष्प बृष्टि झरि लाई री।। 3

सुन्दर श्याम राम की प्यारी शोभा अधिक सुहाई री।
'तुलसिदास' बलिहारी छवि पर गावत भक्ति बधाई री।। 4

पद – 4

जा दिन सीता जनम भयो।
ता दिन ते सबही लोगनि के मन को शूल गयो।। 1

अध्वर आदि अवनि ते उपजी दिवि दुन्दुभी बजाये।
बरसत कुसुम अपार शब्द जय व्योम विमाननि छाये।।

जनकसुता दीपक कुल मण्डन सकल सिरोमनि नारी।
रावन मृत्यु मुकुति अमरनगन अभय दान भयहारी।। 3

सुन्दर शील सुहाग भाग की महिमा कहत न आवै।
परम उदार राम की प्यारी पदरज 'नाभौ' पावै।। 4

पद – 5

आज जनक नृप–राजसदन में बाजत रंग बधाई।
प्रगट भई शुभ रूप शीलनिधि श्रीसीता सुखदाई।। 1

सुनि पुर नारि सिंगार नवल तन घर–घर ते उठि धाई।
किंकिनि नूपुर शब्द मनोहर पुर वीथिन छवि छाई।। 2

हाथन कंचन थार विराजत मंगल साज सजाई।
गावति गीत पुनीत सबै मिलि निज मन्दिर सों आईं।। 3

निरखि यदन छवि सदन कुँवरि को पुनि–पुनि लेत बलाई।
वारति भूषण करति आरती हरष न हृदय समाई।। 4

रानीजू वर वसन सुवासिनि विविध भाँति पहिराई।
चिरजीवहु यह सुता सुलक्षणि देत असीस सुहाई।। 5

सतानन्द आनन्द उमगि मन संग विप्र समुदाई।
करत वेद-विधि सामगान धुनि श्रवन सुखद मन भाई।। 6

मागध सूत भाट बन्दीजन बिरदावली सुनाई।
देत दान नृप धेनु वसन मणि कंचन झरी लगाई।। 7

ध्वज पताक वर कनक कलश पुर शोभा बरनि न जाई।
बजत निशान भूमि नभ सुर मिलि कुसुमावलि बरषाई।। 8

सुफल मनोरथ भये सबनि के मोद अधिक अधिकाई।
हिये हुलास 'दासनारायण' भक्ति निछावरि पाई।। 9

पद - 6

शुभ दिन सुकुल पक्ष तिथि नौमी नौबत बजत सुहाई री।
जनक नरेश भवन सुकृत फल मूरति कन्या जाई री।। 1

सुनि पुर बनिता बनि ठनि दौरीं गजमनि चौक पुराई री।
मानो लेन उदधि ते लहरें सुख विधु मिलनि सिधाई री।। 2

झलकत अंचल चंचल के तन उमही घर न रहाई री।
मानो चपला विपुल मेघ ते दुरि-दुरि देत दिखाई री।। 3

झरि-झरि परत कुसुम कच विथुरे श्रमकन मुखपर छाई री।
मनो चन्द मुकुता को नव बन डारै मणि कुमलाई री।। 4

करि-करि थारि-थारि-मंगल भरि कोई चलि न सकाई री।
जापै रूप भरी मृगनयनी जे पुनि हर्ष भराई री।। 5

अनब्याही ब्याही लरिकौरी और कोई जठराई री।
अब परनी मानो सब तरुनी छवि बरनी नहिं जाई री।। 6

गावत गीत पुनीत बधाई पटरानी ढिग आई री।
मानो शारद विपुल वेष धरि सुख की करत बड़ाई री।। 7

विविध वेष धरि भेंटत सब मिलि रानी भाग सिहाई री।
मानो छवि की छटी नटी सब पूजत भाग भलाई री।। 8

परी धूम नभ भूमि रसातल सुनि सिय जन्म बधाई री।
नाग सिद्ध मुनि चारन गावत अपर सुमन बरषाई री।। 9

गान निशान वेद मंगल धुनि सुनिय न आप पराई री।
जय-जय वाणी तिहुँपुर ब्यापी परवन पै अधिकाई री।। 10

जनकनगर नभ विमल चाँदनी बिबुध कुसुम विगसाई री।
सबै प्रकार प्रफुल्लित निरखै कमल विपिन मुरझाई री।। 11

नृप नागरि सागरि ज्यों उमगित जा घर सम्पति छाई री।
ज्ञान विराग रतन निवछावरि प्रेम लहर लहराई री।। 12

योग समाधि सिद्ध फल मुक्तिन सन्त चहैं ठकुराई री।
'कृपानिवास' सबै भरि पाये जिन सिय गोद खिलाई री।। 13

पद – 7

नगर बगर में धूम सु घर-घर बरस गाँठि प्यारी जनकलली की।
गावत प्रमदा विशद बधाई सुभग सुनैना कोखि फली की।
मंगल गंध प्रगट मिथिलासर राम भँवर हित कमल कली की।

पद – 8

गावति मंगल मिथिलापुर की।
गीरी गुन–जीवन गरवीरी तान रसीली मधुरे स्वर की।। 1

सोंधे लपट उपट अंगन सों अलिगन झपट निपट चातुर की।
नर्तति नवल नटी पट फरकत सरकत नीवी मृदु कटि मुरकी।। 2

कबरिन्ह सो झरि सुमन परत कुछ केशरि कुमकुम सीकर बुरकी।।
बिबस भई गई लाज तियन की प्रीति प्रगट भई सबके उर की।। 3

सुर नर पतनी जितनी आई कौतूहल रस–बस आतुर की।
'कृपानिवास' खड़ी पुतरी सी सुथरी शीश परी मनु भुरकी।। 4

मंगल पद – 9

सियजू सुहेलो गाय बजाय सु सुन्दरी।
मिथिलापुर की नारि सुहावनि सुन्दरी।। 1

ललकि ललित लय भास मधुर ठहरावहीं।
सुर वद ग्राम ताल मिलि राग सोहावहीं।। 2

नख शिख सजित सिंगार दिपैं छवि ऊजरी।
मानो कनक सुबेलि सुफल फूलन भरी।। 3

यौवन रूप सु भार भरी झुकि–झुकि परैं।
मदन खिलाड़िनि हैं उमड़ि गुन सो फिरैं।। 4

फटिक अजिर करजोरि कबहुँ झूमरि करैं।
मनहुँ मरालिनि पाँति सुभग पय सर चरैं।। 5

छकी छबीली छवनि घटी छवि को छटा।
हास विनोद कोलाहल कौतुक के ठटा।। 6

रीझि रही नृप नारि उतारति आरती।
करति सु सम्पति वारि न नेकु सँभारती।। 7

भीजि रह्यो नृप रीझि कहैं कस दीजिये।
मैं मेरी सब नारि मोल करि लीजिये।। 8

विथकि विचारत बिबुध बड़ी कोउ ए गुनी।
विधि कृत विज्ञ जहाँ जग देखी न सुनी।। 9

निरखत घन के ओट सराहत सुरबरे।
जनकपुरी सुख देखि सकल आनन्द भरे।। 10

तिनके मंगल विपुल निगम न सकैं कही।
'कृपानिवास' उपास सिया जिनके सही।। 11

पद – 10

आजु सखी एक बात नगर में अबहिं सुनी मन भाई री।
प्रगट भई सरवेश्वरि सीता जनक नृपति घर आई री।। 1
गृह–गृह द्वार नौबतैं बाजें मोतियन चौक पुराई री।
नगर गली बाजार जहाँ–तहँ गावत गीत सोहाई री।। 2
कदलि–खंभ अरु ध्वजा पताका विविध वितान तनाई री।
कंचन कलश बनी दीपावलि पुरी रुचिर छवि छाई री।। 3
हरदी दही परस्पर छिरकत माखन मुख लपटाई री।
नाचत सब नर नारि परस्पर देह दशा बिरसाई री।। 4

उड़त गुलाल अबीर अरगजा अवनी कीच मचाई री।
केशरि घोरि कुंकुमा छिरकत कनक कलश धरवाई री।। 5
कनक रतन गज बाजि जहाँ तहँ रँग-रँग बसन बनाई री।
देत दान महाराज जनक नृप याचक जनहिं बुलाई री।। 6
चेरि भई सब अष्टसिद्धि श्री नवनिधि रहीं लजाई री।
अचरज कहा जगत की जीवन प्रगटीं सिय सुखदाई री।। 7
उमगे फिरत सकल पुरवासी सिय स्वामिनि सी पाई री।
सुख विलसो श्री जनकनन्दिनी 'बालअली' बलि जाई री।। 8

पद - 11

नमो-नमो श्री जनकलली जू।
जनमत भई विदेह नृपति गृह कीरति त्रिभुवन उमगि चली जू।।
मिथिला आलबाल निमिकुल की सुकृत बेली सुफल फली जू।
बीनत मुनि माली ब्रह्मादिक बालचरित मृदु कुसुम कली जू।।
षड्दल गुण सम्पति परिपूरण चितवत अनुपम रूप झली जू।
कृपा निवास सुरभि प्रेमा भर सेवत अलि बड़भाग भली जू।।
'सूरकिशोर' निगम जल सींचत मायिक गुण एको न रली जू।
अवलम्बन रघुवीर कलपतरु भइ भू पर उपमा अतुली जू।।

पद - 12

आजु जनकपुर बजत बधाई।
प्रगट भई कुलमण्डन कन्या आनन्द उर न समाई।। 1

हरषे जनक जननि पुनि हरषी, दरशन पावन पाई।
पूरन भाग सुकृत फल लाग्यौ, भई बात मन भाई।। 2

हरषत बरषत कुसुम परस्पर, नभ दुन्दुभी बजाई।
भयो कोलाहल कौतुक देखें, नाचत सुर समुदाई।। 3

देत दान सनमान सहित नृप जाचक जात अघाई।
शिव प्रसाद ते भरे भवन सब, अधिक–अधिक अधिकाई।। 4

घर–घर बन्दनवार पताका, मंगल गीत सुहाई।
जन्म उछाह जानकी जू को बरनौं कहा बनाई।। 5

नगर–बगर निवछावरि मनिगन नाचत लोग–लुगाई।
जन्म बधाई सब मन भाई 'अलिकिशोर' तहँ गाई।। 6

पद – 13

जनकराय के कुँवरि प्रगट भई, बाजत रंग बधाई।
जाकी कृपा कटाक्ष लेश ते, विधि हरिहर प्रभुताई।। 1

जाको यश निगमागम सुरमुनि, शेष सिद्ध समुदाई।
नेति–नेति कहि गावत ध्यावत, चरणकमल चित लाई।। 2

जेहि नखछवि ते रमा आदि तिय, पाई रूप लोनाई।
ह्वै किंकरी सभीत प्रीति युत, सेवत ताहि सदाई।। 3

रूप राशि सोइ गोद सुनैना, मोद न हृदय समाई।
ब्रह्मादिक सुर चढ़े विमानन, निज–निज साज बनाई।। 4

बरषत कुसुम समूह निरन्तर, नभ दुन्दुभी बजाई।
गान करत गन्धर्व अपछरा, निर्तत भेद बताई।। 5

जै-जै धुनि बैकुण्ठ लोक लौं, गोपुर सरस सुहाई।
बीथी अति रमनीय नगर की, अतर सुगन्ध सिंचाई।। 6

गृह-गृह प्रति नव ध्वजा पताका, बन्दनवार बँधाई।
मंगल कलश धरे प्रति द्वारन, गजमनि चौक पुराई।। 7

हर्ष बिवश मिथिलापुरवासी, सम्पति सकल लुटाई।
छिरकत केशर नीर अरगजा, मृगमद कीच मचाई।। 8

नाचत नटी अनन्त सुन्दरी, राजद्वार अँगनाई।
मागध सूत बन्दि निमिकुल को, गावत बिरद बड़ाई।। 9

बाजे बजहिं बिविध सुर-सुन्दरि, नाचहिं वर सुरनाई।
नव नागरी राजपुर घर की, नव सत साज सजाई।। 10

मंगल द्रव्य हेम थारन भरि, गजगामिनि चलि आई।
करत गान प्रविशत नृप मन्दिर, सुरतिय तिन्है लजाई।। 11

दिव्य वसन भूषन सजि अंगन, दिव्य सुगन्ध लगाई।
वस्तु अनेक भेंट लैं पुरजन, चले राजगृह धाई।। 12

महा भीर रसरंग कोलाहल, नहिं कछु परत सुनाई।
सतानन्द आदिक मधुरे स्वर, वेद ऋचा धुनि छाई।। 13

होम-अनल की धूम सुगन्धित, बढ़ि अकाश नियराई।
तिरहुतनाथ जानि शुभ अवसर, याचक विप्र बोलाई।। 14

स्वर्ण वसन मनि रजत बाजि गज, शिविका रथ सुरगाई।
करि भूषित दिये भूप सबनि कहँ जो जेहि अति मन भाई।। 15

देत आशिषा चले लड़ैती, चिरजीवो सुखदाई।
सरबस दान दियो नृप रानी, छत्र मुकुट बिलगाई।। 16

पुलकावली ललित अंगन में, प्रेम वारि करि लाई।
उमगि चल्यौ आनन्द-सिन्धु लखि, दिनमनि गति बिसराई।। 17

वर्ष एक को भयो दिवस यह, मरम न काहू पाई।
देखत रबि निज बंस महासुख, चले अनन्द बढ़ाई।। 18

सुख समाज अवलोकि शेष, श्रुति, शारद रही चुपाई।
लोकपाल मिथिलेश विभव लखि, निज ऐश्वर्य भुलाई।। 19

निज-निज लोक गये सुरवर नृप, गावत गुन गरुआई।
जनकलली रसरली बाल की 'चित्रअली' बलि जाई।। 20

पद - 14

बजत बधाई आज जनकपुर, मंगल मुद अधिकाई।
जाई सुता सुनैना रानी, सकल लोक सुखदाई।। 1

नौमी सित माधव पुनीत अति, मास सकल श्रुति गाई।
मध्य दिवस शुभ लगन वार ग्रह, उच्च पंच शुभदाई।। 2

घर-घर गान करत पुर बनिता, दान देत उमगाई।
भूषन बसन करत न्यौछावरि, निज वित सुधि बिसराई।। 3

बगर बजार चौक चारौं दिशि, रचना ललित रचाई।
ऊँचि अवासनि ध्वजा पताका, केतु कलश छवि छाई।। 4

मणिमय बन्दनवार द्वार प्रति, गजमणि चौक पुराई।
धरे कनक घट सुभग साथिये, दीप माल रुचिराई।। 5

1
2
3
4

रोपे बंश रसाल कदलिका, पूगीफल बहुताई।
जहँ-तहँ वसन वितान बादले, शोभा बरनि न जाई।। 6

अतर गुलाब अरगजे मग बिच, सींचत छिन-छिन छाई।
नाचत नटी चौक चौहट बिच, अपने रँग उमगाई।। 7

पुरवासिनि सजि मंगल गावत, भूप भवन चलिं धाई।
भई भीर रावले राय के, निज पर कछु न सुनाई।। 8

बाहिर बन्दीजन विरदावलि, बदत बंश विदिताई।
गायक गुनि बहु याचक जन की, संकुलता किमि गाई।। 9

नाचत नभ सुर नटी मगन मन, बाजे बिविध बजाई।
विबुध विमान साजि सब आये, निरखत नगर निकाई।। 10

बरसत सुरतरु सुमन समूहनि, सेवन समय जनाई।
विधि हरिहर बहु रूप सराहत, शीरध्वज प्रभुताई।। 11

रमा उमा शचि शारद सुरतिय, नरतिय वेष बनाई।
आई महल मिथिलापति के सिय, रूप निरखि सुख पाई।। 12

सुकृत सराहि कहत मृदु बानी, रानी जू लीजे बधाई।
ऐसी सुघर सलोनी सुलक्षणि, बेटी कौन तिय जाई।। 13

हम तो सुनी न लखी आजु लौं, या सुखमा परताई।
'रसिकअली' जौ तुला तौलिये, कोटिन रति हरुवाई।। 14

पद - 15

माधवमास पुनीत परमप्रिय, तिथि नौमी सरसाई।
अग-जग हरस बरस सुर कुसुमन, नभ दुन्दभी बजाई।। 2

रानि सुनैना मन प्रसन्न युत, गान करत हरषाई।
मध्य दिवस प्रगटत भई, सियजू, अद्भुत राति जगाई।। 3

दिव्य सिंहासन मणिमय झालरि, नाना रतन लगाई।
षोडस सखी सौज मंगल सजि, नाम सखी समुदाई।। 4

श्रीप्रसाद श्रीचन्द्रकला जू, विमला विमल बनाई।
मदनकला श्री विश्व मोहिनी, श्री उर्मिला भलाई।। 5

चम्पक माला रूप लता जू, चारुशिला रुचिराई।
हेमा छेमा वरासुरोहा, पद्म सुगन्धा माई।। 6

श्री लक्ष्मणा सलोनी सुभगा, चारु लोचना भाई।
चहुँदिशि सखी लिये मनिमाला, स्वामिनि सेवा लाई।। 7

चारु चन्द्रिका जड़ित मनोहर, नख-सिख सुन्दरताई।
शेष शारदा मौन गही जब, को जो शोभा गाई।। 8

जनकराज श्री रानि सुनैना, यह छवि देखि लजाई।
मन की जाननिहार सु सीता, बालरूप दरसाई।। 9

कौतुक देखि विधाता, शंकर देवराज समुदाई।
नाचत गावत जै-जै स्वामिनि 'जानकिवर' जै पाई।। 10

पद - 16

जय-जय-जय श्री स्वामिनि सीता।
बरषगाँठ जा दिन सिय आयो, भायो सब जग भयो अभीता।।

जहँ–तहँ लोक असोक बिलोकत, कोउ न रह्यो सुख आनन्द रीता।
श्री मिथिलेस सुनैना रानी, आपु बजावत गावत गीता।।
ज्ञानी ध्यानी अभिमानी सब, कहत अवस ह्वै रघुवर सीता।
'श्रीजानकीवर' की प्राणपियारी, जपत रहत नित सीता–सीता।।

पद – 17

जनकराय के मोद बढ़ायो, सुनि ढाढ़ी निज आयो।
बंस प्रसंसि जोहारि सु आदरि, करि नृप निकट बुलायो।। 1

निमिकुल दीप सुनो या घर की ढाढ़िनि वेदनि बेदन गायो।
कुँवरि भई सत कुँवरि सिरोमनि, आज दाव बनि आयो।। 2

विमल मनोरथ विपुल दिवस ते, सुफल जानि हरषायो।
मो मन चाह निबाह बड़ो कुल, परम उछाह समायो।। 3

या पौरी तजि अपर न याँचों, दृढ़ मन आस सदायो।
सुनासीर कमलापति आगे, करजोरे धृग जायो।। 4

यह घर के बल धनद वारि सत चाहत आवत धायो।
सिद्धि बोहारत रिद्धि पदारथ, मेरे बाल खेलायो।। 5

तुम्हरे पितु ने मेरे पितु को, नव लख बाजि चढ़ायो।
भूषन बसन गिनै को नागर, सागर मनहिं छकायो।। 6

रावरि देन बनै नहिं बरनत, जय जयकार सवायो।
अब मोहिं बिदा करो घर जाऊँ, ढाढ़िन लग्यो उम्हायो।। 7

हँसि कह राव कहो सोइ दीजै, राज कोष पुर चाह्यो।
तुमको अचल सो राज हमैं सुख, लैहौं कछु मन भायो।। 8

सुनु महराज राज चूड़ामनि, सुयश रहै जग छायो।
अपनी लली को बदन दिखावो, अब मैं सब भरि पायो।। 9

सभा सकल आनन्द मगन भई, सुखमय वचन सुनायो।
'कृपानिवास' राखि छवि सियजू, लखि-लखि मन न अघायो।। 10

पद - 18

ढाढ़िनि रघुवंशिन की आई।
चढ़ि गज बाजि बहोर संग बहु, अतिहिं तमाम सुहाई।। 1

पैठत पुर फरके अंग अंगनि, मंगल सगुन जनाई।
आजु मनोरथ होय सुफल सब, करि आयो मनभाई।। 2

पुर पौरी ते गाय बजावति, आवत सब इतराई।
देखि स्वरूप लगे सँग कौतुक, बिचकित लोग लुगाई।। 3

करत बिचार नारि नर सिगरे, को है कौन बुलाई।
इन्द्राणी ब्रह्माणी गिरिजा, सुखमा देखि सकाई।। 4

1
2
3
4

सुघरि सभा मन्दिर ढुरि नाची, नृप बोलनि में पाई।
सबहिन जानी सनमानी तब, रानिन बोलि पठाई।। 5

चली सहल मद गहल महल, में लहलहात तरुणाई।
मानो प्रेम भक्ति की महिमा, सुख बैकुण्ठ समाई।। 6

बड़ी ठौरि की जानि मानि करि, रानिन आइ अगाई।
मनो छवि गंग मिलन वारिधि ते उमंगि तरंग सु धाई।। 7

नाइ शीश आशीष दई बलि, हो जगदीश सहाई।
जाई कुँवरि उम्हाई सुनु बलि, आई देन बधाई।। 8

करि तसलीम उठी जब नाचन, जौवन जोर गोराई।
उघटि सुगंध पतंग उछारनि, सुघटि मृदंग बजाई।। 9

नूपुर तान गान तालिन सों, इक स्वर राग रसाई।
ताल प्रबन्ध मधुर छन्दनि सौं, मन्द-मन्द सुर गाई।। 10

सब गुन कला प्रवीन झीन कटि, मटकि लटकि लचि जाई।
मनो छवि दीपशिखा सी सुन्दरि, पवन लगे थिरकाई।। 11

रम्भादिक सुरबधू विमोहित, शारद की सुघराई।
चकित सबै मुनिजन त्रिभुवन के, योग समाधि भुलाई।। 12

देन लगे नृप रीझि निछावरि, रावरि नारि सिखाई।
ऐसी कछु दीजै ढाढ़िन को, होय अवध में बड़ाई।। 13

अनगिन पट भूषन मनि मानिक, हथिनी माल भराई।
संग के याचक किये अयाचक, दासी दास अघाई।। 14

नाक चढ़ाय कहति ढाढ़िनि हँसि, नहिं मम भूख भगाई।
ज्यों मुकुता फल भोगि मरालिनि, कंकड़ दै बहकाई।। 15

बिनय करैं नृपरानि ढाढ़िनि सों, खोलो बात दुराई।
हमरो हैं सब तुमरे आगे, शंकर कृपा कराई।। 16

धन की चाह चली नहिं घर ते, और कछु ठहराई।
हमरे लला लली तुम्हरे बलि, कीयो लिये सगाई।। 17

हँसे राय रानी मनमाने, तब सिय गोद खिलाई।
कुँवरि कान में कछु बानी कहि, मनो निज बात पढ़ाई। 18

चली अवधपुर सौगुन सुखधन, मान महत गरुआई।
'कृपानिवास' प्रसाद उपासिक, मन की आस पुराई।। 19

सोहर पद - 19

जनकसुता भइ आज काज बिसरावहिं हो।
ललना, सजि नवसप्त सिंगार नृपति घर जावहिं हो।। 1

भरि-भरि मंगलथार समाज बनावहिं हो।
ललना, झुण्ड-झुण्ड मिलि चलत महा छवि छावहिं हो।। 2

श्री जनक भवन में जाय चोप उपजावहिं हो।
ललना, नाचहिं राचहिं रंग बाजने बजावहि हो।। 3

धनि राजा धनि रानी जू गोद खेलावहिं हो।
ललना, धनि हम सब पुरनारि जो सोहिलो गावहिं हो।। 4

यों कहि वृन्द बनाय रावले आवहिं हो।
ललना, निरखि लली करि आरति अति हुलसावहिं हो।। 5

यह समाज सुख देखि देव ललचावहिं हो।
ललना, व्योम विमान बनाइ सुमन झरि लावहिं हो।।6

जो यह मंगल गावहिं गाय सुनावहिं हो।
ललना, 'सुधामुखी' सिय चरण भक्ति बर पावहिं हो।। 7

सोहर पद - 20

हलवा जोतैते राजा जनकन येहो राजा जनकन हो।
ललना, अनुपम कन्या पाये सु मोद बढ़ायेल हो।। 1

मास वैशाख शुक्लपक्ष नौमी, शुक्लपक्ष नवमी न हो।
ललना, सीता नाम धराये, मुनिन गुन गायेल हो।। 2

तोरन, केतु पताक, सु येहो पताकन हो।
ललना, बन्दनवार धराये सु नगर सुहायेल हो।। 3

बद पुरान प्रसंसत जाहि प्रसंसत हो।
ललना, सुनैनाजू गोद खेलायेल हिय हुलसायेल हो।। 4

'रामशरण' मिथिलेश द्वार पर, मिथिलेश द्वार पर हो।
ललना, चहुँदिसि मंगल चारु सु सोहर गायेल हो।। 5

रेखता पद – 21

लखो री आज निमिराजैं। खुशी के सज रहे साजैं।।
महल में बेद धुनि भारी। करै हैं बिप्रवर झारी।।
मगन मन सब हैं याचक गन। मिले हैं मनि जटित भूषन।।
सुआसिनि गान है करतीं। मुदित मन साथियाँ धरतीं।।
सुमन बहु रंग की माला। बरसती हैं अमर बाला।।
गगन में दुन्दुभी बाजी। हुए नर नारि सब राजी।
सुगन्धित जल छिड़कते हैं। चटकते हैं मटकते हैं।।
समय है खूब सुखदाई। सुनैना ने सुता जाई।।
स्वभाविक ही सुहावन है। करोड़ों रति लजावन है।।
'युगल' बर की कृपा पाऊँ। सदा इनका सुयश गाऊँ।।

रेखता पद – 22

सुहाई आज की रजनी। बिलोको नैन भरि सजनी।।
सखी सब रंग राती है। सुहावन गीत गाती है।।

विविध भूषन बसन धारे। किये नवसप्त सिंगारे।
सुनैना के भवन सोहैं। रमा गौरादि मन मोहैं।।
लली बिधु मुख निरखती हैं। पुलकि तन हिय हुलसती हैं।।
लता सी 'हेम' की डोलैं। मधुर मृदु पिक वचन बोलैं।।

रेखता पद – 23

सुकृत मिथिलेश के जागे। सहायक देव गन लागे।।
चले सुख सिन्धु उमड़ाई। निरखि शशि मुख सुता जाई।।
सुनैना प्राची दिशि पावन। उदय यह बिधु कियो भावन।।
जगत में छाई उजियारी। गई त्रय ताप हिय हारी।।
सुधामय लोक सब कीन्हें। जनम मरणादि हरि लीन्हें।।
बधाई बज रही घर-घर। सकल मिथिलापुरी अन्दर।।
न जाचक कोई मिलते हैं। अजाचक सब निकलते हैं।।
बजे पुर व्योम में बाजे। रसिक आनन्द में गाजे।।
'मधुपअली' सबको कर लीजै। सदा आनन्द सुख दीजै।।

रेखता पद – 24

चरणगति चलति हैं प्यारी। निरखि गति मगन महतारी।।
ठुमुकि-ठुम अवनि पग धरती। रुनक झुन पैजनी करती।
अली मिलि खेलना ल्याई। मुखाग्रे गेंद गुड्डुवाई।।
नचैं शुक सारिका मोरा। फिरैं कलहँस के जोरा।।
नचावैं ताल दै बाला। दिखावैं रत्न मणि माला।
भयो सुख भवन में भारी। गनत गुण शारदा हारी।।

मातु की गोद पुनि आई। उतारत नून अरु राई।।
बिबुध जन कुसुम बरषावैं। रेखता 'राजमन' गावैं।।

पद – 25

डगर–डगर बिच मिथिला नगरिया बधैया बाजे।
राजाजी के शोभे मुकुट पितांबर सुनैना रानी के लाली पियरी चुनरिया।।
राज जी लुटावें अनधन सोनवाँ सुनैनारानी नग जड़ित जेवरिया।
'भगवत रसिक' मगन होइ गावें नचन लागे सब लोग लुगइया।।

पद – 26

सुनैना रानी बजत बधाई तेरे द्वार री।
प्रगटी सुता सुलच्छनि सुन्दरि, मिथिला अवध सिंगार री।।
रघुकुल तिलक द्वार तेरे अइहैं, भूपति मुनिन समाज री।
'अग्रअली' की स्वामिनि प्रगटी, रसिकन हिय अनुराग री।।

पद – 27

सुनैना रानी अपनी लली को दुलरावैं।
मुख चूमैं अरु कण्ठ लगावैं, मन में मोद न मावैं।।
शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं, निगम नेति कहि गावैं।
'हरिसहचरि' बड़भागिनि रानी, अपनी गोद खिलावैं।।

पद – 28

जनकलली जू को सोहिलो गाऊँ।
धन्य जनक धनि रानी सुनैना, निरखि लली मुख दृगन जुड़ाऊँ।।
या कन्या कुल प्रगट कियो है, सुर नर मुनि जाको सुमिरत नाऊँ।
'हरिसहचरि' वारत तन मन धन, भक्ति बधाई नित नई पाऊँ।।

पद – 29

अवधपुर मंगल धुनि सरसानी।
नवल बधू की वर्ष गाँठ लखि, फूली दशरथ रानी।।
नगर नगारे नौबत बाजै, नाचहिं नवला गावत बानी।
'कृपानिवासअली' छवि निरखत, वारि सु पीवत पानी।।

पद – 30

चलिं छाँड़ि सकल गृह काज जनकपुर कामिनियाँ।
अनुपम बेटी जाई सुनैना, सुनत दौरि जैसे दामिनियाँ।।
कंचनथार आरती साजैं कामिनि कोटि लजावनियाँ।
कोकिल कण्ठ लजात गान सुनि, गावत जन्म बधावनियाँ।।
पहुँचीं जाइ महल के भीतर, आरति करत न्यौछावनियाँ।
निरखि सुता छवि नेह छकी उर, देह दशा सुधि कावनियाँ।।
'रसिकअली' की स्वामिनि सियजू, नाते नेह निबाहनियाँ।
जाके पद सेवति हरिहर तिय, शारद गुणगण गावनियाँ।।

पद – 31

बाजे–बाजे बधाई आजु जनकपुर रंग भरी।
रानी सुनैना बेटी जाई, आज सुदिन शुभ योग धरी।।
भये मुदित सुर साधु भूमि द्विज, असुरन के सिर गाज परी।
गोरे अंग रूप गुणराशी, दामिनि की दुति दूरि करी।।
घर–घर गान करत पुरबनिता, मंगल घट प्रति द्वार धरी।
रुचिर वितान पूग कदली तरु, रोपि सुमंगल द्रव्य भरी।।

तोरन केत पताक ...

सजि-सजि यान विबुध नभ छाये, बरसत कुसुम लगाइ झरी।
'रसिकअली' गावत सुरगायक, नाचत कोटिन इन्द्रपरी।।

पद - 32

बाजे-बाजे बधाई वाह सोहावन सुन्दरियाँ।।
श्री नृपमणि मिथिलेश सदन कल, कौतुक नाना हुँदरियाँ।
वारों तन मन बसन लसन भल, भूषण मोहन मुंदरियाँ।।
सजनी साज सिंगार हार उर, पहिरु रँगीली चूँदरियाँ।
'युगलअनन्य' हिये हरदम नव, परत प्रेम रस बूँदरियाँ।।

पद -33

नाचे-नाचे नवेली नारि नूतन नाज करे।
ताथेइ-ताथेइ तरल ताल गति, रति पति प्रान हरे।
विविध विलास प्रकास हास रस, जस भल भाव भरे।।
रीझि देत मिथिलेस महामनि, मुक्तामाल गरे।
'युगलअनन्य' मोहिनी मूरति, सिय हिय माँहि धरे।।

पद - 34

गावो-गावो सहित अनुराग बधाई सिय जू की।
ऐसोइ दिवस सोहावन भावन, भामिनि, भूतल भाग।।
कुसुमकली बिकसी नाना विधि, सिधि सब विहरत बाग।
योग सुयोग नखत नवीन निज, नेह मनोहर राग।।
सहज सुभाय गाय गुनगन सखि, सजिए सरस सोहाग।
श्री मिथलेश सुता कल कीरति, उदित भुवन गत दाग।।

आलस नींद तजो सब सजनी, भाई रजनी जाग।
'युगलअनन्यशरण' की स्वामिनि , सुख सीमा सत माँग।।

रूपक धमार पद – 35

प्रगटी लली मिथिलापति घर रे, मोद भयो सुख भयो त्रिभुवन में।
बजत बधाई गुनि जन गावत, नचत मुदित मन नारी और नर रे।।
पुर कुलबधू ढोव लै निकसत, बिकसित मुख दुति दामिनि तन रे।
'दम्पतिअली' सुमन सुर बरसत, हरषत मुनिजन बिधि हरि हर रे।।

पद – 36

पगन कब चलिहौ मेरी सिय प्यारी।
बार–बार उर लाय मल्हावति, प्रेम मगन महतारी।।
भूषण वसन सँवारि निरखि छवि, लेहिं मातु बलिहारी।
बाल–विनोद मोद भरि सब उर, तन मन सुरति बिसारी।।
जाके गुण गावत सनकादिक, शेष शारदा हारी।
'लालदास' तेहि निरखि सुनैना, नैन निमेष निवारी।।

पद – 37

सुनैना माई धनि–धनि तेरी बेटी।।
जाको अंत अनन्त न पावत, सो तव गोद में लेटी।
जेहि दिशि दृग किंचित अवलोकति, तेहि के सब दुख मेटी।।
यहि पद सद रति अति मुद दाई, सब सुख सुकृत समेटी।
श्री गुरुकृपा सु 'युगलविहारिनि' पाय प्रिया पिय भेंटी।।

पद – 38

तेरी लली चिरजीवो री माई।
सकल लोक पद सेवहिं याके सीता नाम सुहाई ।।
जग विजयी गुण शील मनोहर नेह भर्यो रसदाई।
'रसिकअली' वर मिलिहैं याको कोटि अनंग लजाई ।।

पद – 39

चिरजीवो हमारी दुलारी सिया।
जाके हित मिथिलेश सुनैना अमित जनम बहु तप सु किया ।।
गनपत्ति गौरि महेश कृपा से पूरी भई अभिलाष हिया।
अब नित नव आनँद सरसैहैं सुख पैहैं मिथिला की तिया ।।
नर–नारी मन माने मनोरथ पाय न फूलि समैहैं हिया।
'मधुपअली' सिय के ब्याहन को जब ऐहैं अवधेश पिया ।।

पद – 40

हमारी लाड़िली गुसइयाँ कुशल राखैं ।।
जाकी कृपा कोर नित नूतन हम आनन्द सुधा चाखैं।
देवी देव पूजो सब मिलि के जामें नहीं कोउ मन माखैं ।।
बर अनुकूल देहु जगदीश्वर पूजैं हिया की अभिलाखैं।
'मधुपअली' युग–युग जिवो स्वामिनि श्री सियजू की जय–जय भाखैं ।।

पद – 41

मैया मैं आई बड़ी दूर से खिलौना ले लो।
आज सुनी मिथिलेश भवन में लली प्रगट भई आई।
जनक नगर नरनारि मुदित मन घर–घर बजत बधाई ।।

भाँति-भाँति के सुघर खिलौना अपने हाथ बनाई।
अति अनुराग पगहिं पग चलिकै मैं तुम्हरे ढिग आई।।
मेरी यह अभिलाष पूरि करि देहु सुनैना माई।
मैं अपनी लै गोद लड़ैती को तनि लेउँ खेलाई।।
मोद विनोद जनक-आँगन में दिन प्रति बढ़ै सवाई।
'मधुपअली' मुख निरखि लली को जन्म सुफल होइ जाई।।

पद - 42

खेलत मोरि लाड़िनी झुनझुनवाँ।।
एहि झुनझुनवाँ को शब्द मनोहर सुर मुनि मन ललचनवाँ।।
एहि झुनझुनवाँ सो सब जग खेलै सियजू के कर को खेलनवाँ।
एहि झुनझुनवाँ में बसत सकल जग विधि शिव इन्द्र भवनवाँ।।
हर-डर डरि सिय के झुनझुनवाँ में बसि रह्यो आइ मदनवाँ।
'मधुपअली' याके शब्द सुनन को ललकत अवध ललनवाँ।।

पद - 43

कोई खेल खिलौना ल्योरी।।
बाँझ निपूती काह खरीदैं, चाह कहै लरिकोरी।
हथिनी गज सुखपाल पालकी, डोला, गाड़ी घोड़ी।।
हौं कहों कहा मोल नव नागरि आगरि आप कहो री।
जोई मोल दियो कौशिल्या, सोई आज चहों री।।
मेरो खेल महा महँगे सुनि, नीको काम कह्यो री।
कहँ लौं बात कहौं मेरे घर की ब्रह्मा आय पढ्यो री।।

तेरी सोहन मोहन कन्या, मेरे प्राण हर्यो री।
'कृपा निवास' सिया सुन्दरि की झिगुली टोपी द्यो री।।

पद – 44

नगर की नीकी–नीकी लुगाइयाँ, बनि ठनि कौतुक ल्याइयाँ।
कोइ बकरी कोइ पावरि स्वाँगी, रानी राव रिझाइयाँ।।
कोई बनचर कोई नकरी मकरी, लकरी पकरि, नचाइयाँ।
'कृपानिवास' श्री कुँवरि बधाइयाँ पाईयाँ भाईयाँ अघाइयाँ।।

पद – 45

लै लै बन्दनवारे आई।
मालिनियाँ सब मिथिलापुर की रूप भरी सुख छाई।। 1

तामें एक महल को मालिनि फूली उर अधिकाई।
रमक–झमक सो गई रानी ढिग कहति बधाइ–बधाई।। 2

जाई अधिक सलौनी बेटी जग उपमा नहिं जाई।
सुर तिय रमा उमा लखि हमने नेक प्रसंग न पाई।। 3

कहँ लौं भाग सराहौं तेरी अहिप सकै नहिं गाई।
मेरेहूँ अब महरानी जू मंगल की बनि आई।। 4

बाँधति हों अब बन्दनवारे द्वारन द्वार सुहाई।
लैहौं नेग झगरि पुनि अपने मनमानी तन भाई।। 5

हँसि बोली तब रानि सुनैना दाव भली है माई।
जो चाहै सो माँगु सयानी लाड़िली की नेवछाई।। 6

लीनी टेरि सबै मालिनियाँ बाँधे द्वार निकाई।
कहि न जात कछु अद्‌भुत शोभा मंगलमूल जनाई ।।
तब रानी सब बोलि लई ढिग डाली मोतिन भराई।
और बसन भूषण बहु दीने महती मान मनाई ।।
सोहिलो गावत चली निज–निज घर, रमकि–झमकि रस दाई।
'रसिकअली' मानौ मिथिलापति घर बहु रिधि सिधि–जाई ।।

पद – 46

बढ़ैया पलना लै कर आयो।
रच्यो रुचिर पाटीर नीलमणि कीलें ललित लगायो ।।
किंकिणि ललित लगी कंचनमय झूमक जोति जगायो।
जाल झूमका विविध रंग के चन्दा चन्द लजायो ।।
मैना मोर कपोत हंसवर सारस बृन्द बनायो।
पवन प्रसंग नचत गुंजत लखि विधि आश्चर्य भुलायो ।।
महरानी बहु दई न्यौछावरि पलना निकट रखायो।
कोमल वसन बिछाइ सुता जब पौढ़ाई छवि छायो ।।
गाय गीत हलरावति रानी नागरि नवल झुलायो।
'रसिकअली' निज स्वामिनि ऊपर तन–मन–धन न्यौछायो ।।

पलना पद – 47

मेरी सिया प्यारी पालन पर झूलें।
चहुँदिसि सखियाँ करत सिंगारन उमगि–उमगि हिया फूलें ।।

जनक नगर में कहर पड़ी है असुरन के हिया सूले।।
रानी सुनैना के मोद भयो है नृप सहर्ष कर खूले।
'रामशरण' सिया शरण गहे ते मिटि जैहैं जग मूले।।

पद – 48

ललित मणि पलना झूलें प्यारी।।
कोटिन सूर्य प्रकाश मणिनमय पलना की छवि न्यारी।
कोइ सखि छत्र विजन चामर लिये कोइ कर सुमन सुधारी।।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, नाचत सखि मनहारी।
'रामशरण' सखि लखि छवि हरषत बार–बार बलिहारी।।

पद – 49

लड़ैती तेरो पलना बना अनमोला।।
डाँड़ी हरितमय खम्भ जड़ित मणि माणिक डोरि अमोला।
चहुँदिशि जुरि मिलि सखियाँ झुलावति गावति राग हिंडोला।।
प्रगट भई निमिबंशनन्दिनी परी नगर बिच होला।
'रामशरण' सखि निरखु लली को सुधासिंधु अब छोला।।

पद – 50

बाजै दुन्दुभी वे नृप मिथिलेश के दरबार।
निकरे जाइयाँ वे रानी जानकी सुकुमार।।
अब हम ताइयाँ वे गल्लैं सादियाँ सुनि कान।
ढाढ़िन ढाढ़ियाँ वे हमनू वे कि श्री महराज।। 1।।

ढाढ़ी बीन बजाँदा, निकले सुरले गाँदा, दादिनि नचदी गाँदी,
लली पर सदके जाँदी, साडी सुनिवे गल्लां, तेरा यश भल्ला-भल्ला।

ऐसीदा दान दिलाँदा, फिर नहिं याचन जाँदा।
फिर नहि याँचदा वे हमनू दान इसड़ा देय।
कहैं जै देवते वे धन वे दान सिर धर लेय।।
धन दिन प्रगटियाँ वे अब अहलादिनी घर आज।
सदके जाँदियाँ वे तुम पर दान दे महाराज।। 2।।

महाराजा दान दिलादाँ, याचणदा जोइ-जोइ पाँदाँ,
दै-दै हस्ती घोड़े, दै जरी पाट दै जोड़े, दे मनि मोतियों दी माला,
दै-दै शाल दुशाला, दै-दै गाँव अनेका, गावै सहित विवेका,
जीवो लली सुखदानी, 'हितजैराम' कुरबानी।।

वाह-वाह का पद - 51

शीरध्वज कुशध्वज बैठे महराज अजी वाह-वाह।
देव सभा राज सभा लीन्हें सब साज अजी वाह-वाह।।
बड़े-बड़े भूप आये बैठे सब ठट्ट अजी वाह-वाह।
वेद पढ़ैं विप्र अरु ओझा मिलि भट्ट अजी वाह-वाह।।
ढाढ़ी अरु भाँड़ अच्छे नाचत हैं नट्ट अजी वाह-वाह।
देखि दुनी रीझि गये दान दिये खट्ट अजी वाह-वाह।।
कड़े दिये मोती दुशालन के पट्ट अजी वाह-वाह।
'हितजैराम' मगन भये सियाराम रट्ट अजी वाह-वाह।।

श्रीचन्द्रकलाजी की बधाई

पद – 1

जै जै श्रीचन्द्रकला सिय-प्यारी।
माधव मास शुक्ल शम्भू तिथि मध्य दिवस प्रगटी मनहारी ।। 1
जस आनंद सित जनम जनक गृह, तैसहि चन्द्र भानु घर भारो।
नामकरन गौतम विचारि धरे चन्द्रकला जगमग उजियारी ।। 2
इनके गान-तान सुनि प्रीतम-प्रिया होत नितही बलिहारी।
इनकी आस करत जे भाविक, ते सियराम महल अधिकारी ।। 3
श्री 'जानकिवर' ते लहहिं निरंतर, कृपा करहिं रघुबर सुखकारी ।। 4

पद – 2

मिथिलापुर बजत बधाई।
श्री चन्द्रभानु घर बर नौबत झर, रंग भरी सुरनाई ।। 1
चन्द्रप्रभाजू के कुँवरि प्रगट भई, चन्द्रकला छवि छाई।
सुख समाज निमिराज प्रसंसत निमिबंसी समुदाई ।। 2
बैठे आइ सभा छवि निरखत इन्द्र सभा ललचाई।
दान मान पूरन गुनि जन भए निरखि रूप सुखदाई ।। 3
श्री 'युगलप्रिया' पालनो रतनमय मातु मुदित पौढ़ाई ।। 4

पद – 3

सुनो मिथलेश महाराजा। बधाई देहु सुखसाजा ।। 1
सुनाऊँ वेद को तत्त्वा। अमृत रसराज रतिसत्त्वा ।। 2

प्रगटि अहलादिनी रानी। राम परब्रह्म दिलजानी।। 3
जीवनी मूरि सुखदानी। रूप रस दिव्य गुणखानी।। 4
नित्य यह धाम मिथिला है। ग्रथित गोलोक सिथिला है।। 5
नित्य निमिराज निमिबंशी। भक्ति लहि रुक्षताध्वंसी।। 6
तुम्हहिं ने जो लही बेटी। हमहिं उपमान कहि भेंटी।। 7
तिनहिं की सहचरी प्रगटी। दिव्य गुन रूप में अघटी।। 8
यदपि विमलादि सरदारी। तिनहुँ से कछु कला न्यारी।। 9
सबहिं ते बुद्धि की भारी। मन्त्र गति शास्त्र श्रुति वारी।। 10
ताहि ते होहिंगी दूती। मिलन रसराज मजबूती।। 11
यन्त्रवर बीन करधारी। रास-रस-मत्त मतवारी।। 12
रसिक जन इन्हहिं ध्यावत हैं। रास-रस जिनहिं भावत हैं।। 13
चन्द्रवर भानु प्रिय भ्राता। लगाई भजन में नाता।। 14
भलाई हो रही जिनकी। प्रभा तेहि रानि हैं तिनकी।। 15
वचन सुनि वेद बर बानी। लखे नृप दृग भरे पानी।। 16
देत नृप वसन भूषन को। लेत नहिं जानि दूषन को।। 17
हमहिं क्या चाहिए राजा। गाय गुन पाय सुख ताजा।। 18
तुम्रारी लाड़िली देखूँ। पाय यह दान सुख लेखूँ।। 19
दिखाई लाड़िली अपनी। बुझाई हीय की तपनी।। 20
चले गुन गाय 'युगल प्रीया'। दृगन में जल भरे हीया।। 21
रसिक यहि पदहि गावहिंगे। भाव में छकि छकावहिंगे।। 22

पद – 4

सहेली सीय की प्यारी। प्रगट भई आज सुखकारी।। 1
छठी उत्साह सिय केरी। जनम भो ताहि मधि मेरी।। 2
चलो सखि राज के रावल। सजै सुख साज मन भावल।। 3
सोहिलो गाय छवि निरखै। बलइया लेहिं हिय हरखैं।। 4
लुटावैं बसु जो संचन की। पुरावैं आस मंगन की।। 5
कला जेहि चन्द्र सुभनामा। अलिनि में अग्र रस धामा।। 6
रसिक रसराज आचारज। गोप रसकेलि में आरज।। 7
नवल कल वीन नारद को। सिखाइ जीतेउ तुँबरू को।। 8
जुगल सुख साजि फुलवारी। मिलावत पीय अरु प्यारी।। 9
प्रेम रस मोद सुखदानी। सु उत्सव जनम को ठानी।। 10

पद – 5

बधाई सीय सखि केरी। सुखद सुरधेनु जन केरी।। 1
सुहावन मास सुभ माधव। सु चौदसि शुक्ल आराधव ।। 2
सुमंगल साज सजि सुन्दर। बोलाओ सन्त करि आदर।। 3
सुपूजन प्रेम करि बिधि सों। सुसोहिलो गान सुनि सधि सों।। 4
जनम को लाभ इतनोई। सु लेवहु आसु भव खोई।। 5
मनावो भाग बड़ अपने। जो पाई ऐसि संघटने।। 6
सुरसिकन प्रान धन जीवन। सु ध्यावत नित्य करि सीवन।। 7
जूथ की स्वामिनी सारी। प्रेम रसमोद बलिहारी।। 8

पद – 6

बधाई मिथिलापुरी बाजै। भईं सर्वेश्वरी आजै।। 1
सखी सब हर्ष में गाजैं। सजैं सुख चैन के साजैं।। 2
भानु श्री चन्द्र घर आई। बधाई देन सुखदाई।। 3
चन्द्रप्रभा मग्न हैं भारी। सुता मुख देखि सुखकारी।। 4
लुटाती हैं विविध भूषन। भये खुशहाल जाचक जन।। 5
प्रभा यह श्याम की आई। किशोरी जू के मन भाई।। 6

पद – 7

चन्द्रकला जु के नवल कुञ्ज में बाजत आज बधाई।
माधव मास शुक्ल तिथि संभू सकल सभी तहँ आई।। 1
यूथेश्वरी महान सखिन में ताते मुद अधिकाई।
बन्दनवार पताका केतू कलश वितान बनाई।। 2
सजत साथियाँ मंगल गावति मोतिन चौक पुराई।
कौतुक करि सब नाचति नागरि नुपूर धुनि सरसाई।। 3
अमित अलिनि युत दम्पति आये स्वागत करि बैठाई।
अति आनन्द भयो तेहि अवसर सो सुख बरनि न जाई।। 4
प्यारी की प्रिय मुख्य सहेली सब कहँ नेवत बोलाई।
भई भीर आँगन घर बाहर अति उत्साह सोहाई।। 5
सिय पिय मध्य सिंहासन राजे चहुँदिशि सखि समुदाई।
भोजन विविध भाँति के नाना सादर सबहिं पवाई।। 6

अँचवन करि बैठे अलि अनसह अतर पान अर्पाई।
माल बसन भूषन दै सबहीं आरति करि सिर नाई।। 7
होन लग्यो रस गान नृत्य नव निरखत सब मन लाई।
प्रेम मोद आचार्य कुञ्ज रहि करि उत्साह बिताई।। 8

पद – 8

जा दिन चन्द्रकला अलि जनमी सो दिन आजु सुहाई।
सिय पिय के मन मोद बढ़ेउ अति बाजत बिशद बधाई।। 1
यूथेश्वरि सरदारि सखिन में रसिकन को रसदाई।
सकल सखी मिलि मंगल गावति नौबत बजत सुहाई।। 2
मंगल-कलश चौक मोतियन की रचना सकल बनाई।
अति उत्साह भरी नवनागरि मन में मोद न भाई।। 3
सिय स्वामिनि की कृपा सु मूरति युगल भाव प्रगटाई।
चन्द्रकला वर नाम सुहावन सोभा बरनि न जाई।। 4
तिनकी षोडश मुख्य सहेली नाम कहौं सुखदाई।
युगल प्रिया श्री प्राणप्रिया जू नवल नेह लतिकाई।। 5
हेमलता श्री प्रीतिलताजू मधुर लता मन भाई।
युगल विहारिनि रूपलता जू श्री रसमोद लताई।। 6
चम्पलता श्री प्रेमप्रभा जू प्रेम सु मंजरि गाई।
रस माला अनुराग लताजू नामलता रसराई।। 7
लतिका प्रेम सीय की भगिनी सेवति लाड़ लड़ाई।
इनकी शरण होत जो भाविक पावहिं रस सो अघाई।। 8

पद – 9

चन्द्रभानु जी के कुँवरि प्रगट भई मुद मंगल जग छाई।
गावति नारि बधाई घर-घर साज बजत समुदाई ।। 1
मागध सूत बन्दि नट नागर बरनत गुन सुघराई।
छन्द कबित पद राग ताल मनो प्रगट रूप दरसाई ।। 2
नभ अरु नगर कोलाहल कौतुक सुख समुद्र उमड़ाई।
रस की सींव सुभग अति नागरि सागरि सील बड़ाई ।। 3
कहा कहौं केहि भाँति सराहौं सिय सखि की प्रभुताई।
तीनि देव जाकी मायाबस रुख लखि कर सेवकाई ।। 4
रमा उमा सारद सखि रति सब लखि छवि रहति लजाई।
जाकी कृपा कटाक्ष परे ते जीव सरस सुख पाई ।। 5
पिप्पलाद मुनि से यह महिमा लोमस रिषि समुझाई।
जाचकगण-गुण गाय सुहावन मन अभिलाष पुराई ।। 6
मगन भये उर ध्यान सुनिधि लहि अपने भाग मनाई।
नाम रूप गुन धाम एक रस नित्य अखण्ड रहाई ।। 7
महरम जन जानहि यह परतम लोक मध्य प्रगटाई।
प्रेम मोद हिय भाव से दरसत कृपा सुसाध्य भलाई ।। 8

1
2
3
4

पद – 10

चन्द्रकला जू की बरष गाँठ आज सुभ गावो मंगल माई।
अति उत्साह भयउ मन भाओ सो सुख बरनि न जाई ।। 1

घर बाहर नारी नर उमगे मंगल साज सजाई।
चन्द्रभानु महाराज राज रिषि मिथिलाधिप के भाई।। 2
ऐसे पितु माता जेहि सुकृत मानहुँ तन छवि छाई।
आपु सियाजू की भगिनी प्रियतर नागरि अति सुखदाई।। 3
उमा रमा ब्रह्मानी जेहि की हरषि करत सेवकाई।
विधि हरिहर जाके बसबरती को बैभव सक गाई।। 4
रसिक जनन को रस बरसावत रास बिहार दिखाई।
प्रेम मोद की मूरि सजीवन संसृति रोग मिटाई।। 5

पद - 11

सिया की प्यारी अली जाई। कहत छवि देखि सब माई।।
पुराई आज जगदीश्वर। सुकृत फल दीन दम्पति कर।।
सुमंगल साज समुदाई। सजावहु आज मन भाई।।
सुआसिनि वृन्द बोलवाई। सुसोहिलो गावो सुखदाई।।
लुटाओ सब सँचे धन को। पुराओ आस मंगन को।।
खुले बड़भाग रसिकन को। जो ध्यावत रास कुञ्जन को।।
प्रेम रस मोद वर पावैं। उमगि आचार्य गुण गावैं।।

पद - 12

आजु जयंती श्रीचन्द्रकलाजू की प्यारी अति मन भाई।
श्रीरसमोदलता गृह उत्सव बजत अनंद बधाई।। 1
मृगमद केसर चन्दन कुमकुन रचि-रचि चौक पुराई।
तेहि पर मंगल कलश धरे सजि मणिमय दीप सुहाई।। 2

सुघर सुआसिनि रचत साथियाँ बन्दनवार बँधाई।
गान ताल अरु विविध कुतूहल रसिक जनन बुलवाई।। 3
आनँद में आनन्द बढ़्यो अति लली छठी छवि छाई।
ताही दिन सुख उदय भयो अति मोह हृदय उमगाई।। 4
मोद-मोद भरि वसन लुटावत रसिक जनन पहिराई।
दान मान सनमान सबन करि आनन्द हिय न समाई।। 5
सिय सनेह दूसर विग्रह होय मोद सु गृह चलि आई।
श्री रसमोद चकोरी प्रफुलित अमल शशि कला पाई ।। 6

पद - 13

रसिकन के मनमोद बढ़ावन प्रगटी श्रीचन्द्रकला सुखदाई।
माधव मास सुकुल चौदस तिथि लली छठी शुभ आई।। 1
तेहि दिन चन्द्रप्रभा महलन में अमल शशि कला छाई।
उमगेउ जनु आनन्द-जलधि युग त्रिभुवन रह्यो डुबाई।। 2
रथ समेत दिनकर हू डूबे सुधि-बुधि सब बिसराई।
एक मास तिन जात न जान्यो मरम न काहू पाई।। 3
अपने कुल आनन्द समुझि रवि चलेउ हृदय उमगाई।
शिव ब्रह्मा नारद सनकादिक याचक वेष बनाई।। 4
श्री मिथिला की गलिन-गलिन बिच नचत फिरत सचु पाई।
तेहि समय निमि कुल गृह-गृह में वेद ऋचा प्रगटाई।। 5
श्री स्वामिनि सिय पिय सेवन हित सुता रूप होय आई।
श्री मिथिला में गृह-गृह मंगल बजत अनद बधाई।। 6

द्वारन बन्दनवार बँधाये मंगल कलस धराई।
केशर कुमकुम अतर अरगजा सड़क बजार सिंचाई।। 7
नाचहिं नवल नागरी जहँ-तहँ मंगल सोहिलो गाई।
सिय सनेह अब उदय भयो सुख त्रिभुवन रह्यो समाई।। 8

पद - 14

बजत बधाई आज महल में प्रगटी चन्द्रकला सखि अगरी।
परमेष्ठी सखि जनकललि की सकल कला गुण में अति नगरी।। 1
चन्द्रप्रभाजी की तप की मूरति आचारज रसिकन कुल सगरी।
इनके चरणकमल आश्रित बिन महल बास सुख के नहिं चह री।। 2
उमा रमा ब्रह्माणि आदि जे दरशन हेतु खड़ी रह पवरी।
जाके विभव शेष नहिं कहि सक कहे एक मुख अग्र कसक री।। 3

पद - 15

बजत बधाई आज मन भाई श्रीचन्द्रभानु जी के द्वार।
सप्त परन की झरन होन लगि बाजा बजत अपार।। 1
पहुँची शब्द स्वर्गताई लों मनु सावन घनकार।
बरषैं पुष्प देव सब हरषैं जै-जै शब्द उचार।। 2
गुनी गंधर्व अप्सरा नाचैं शोभा देखि अपार।
दधि दुर्वा फल फूल जवांकुर कञ्चन कलश सँवार।। 3
पुर की बधू साजि सब मंगल नृत्य करत नृप-द्वार।
गावत मंगल महल पधारैं करि रानी जू सत्कार।। 4

करत प्रशंसा चन्द्रप्रभा जी की कुक्षी सुफल तुम्हार।
जेहि ते प्रगट कियो अस पुत्री रूप गुणन की सार।। 5
सतानन्द उपरोहित आये नामकरन निरधार।
महाराज श्रीचन्द्रभानु जी सुता सुलक्षण सार।। 6
जनकललीजू की मुख्य सहेली यूथेश्वरी सरदार।
कुँवरिन महँ अति कुँवरि मनोहरि यन्त्र बीन करधार।। 7
नाम है चन्द्रकला अस ताते आश्रित जन के शीतलकार।
जब यह यंत्र सप्त स्वर टेरिहैं प्रीतम प्रिया रहत बसकार।। 8
जन्म कुण्डली सुनि नृप रानी हर्ष न हृदय सम्हार।
श्री युगलप्रिया मयूर लौं थिरके सुख सौभाग्य निहार।। 9

पद – 16

श्री चन्द्रप्रभाजी की सुकृत फली है चन्द्रकला सुता जाई।
करि शृंगार जननी छवि निरखत देह दशा बिसराई।। 1
कबहुँ पालना घालि झुलावति निरखति इकटक लाई।
गावति मंगल मधुरी बानी कहि गुण रूप लुनाई।। 2
चूमि-चूमि चुचकारि दुलारति लेति बलाई माई।
श्री युगलप्रिया मनमोद सदा ढिग रहति करति सेवकाई।। 3

पद – 17

एक दिवस आनन्द भयो भारी। काह कहौं कह्यौ जात न प्यारी।
तदपि कहे बिनु रह्यो न जाई। बढ़्यो सो वेग हृदय उमड़ाई।। 1
चहुँदिशि अली सखी गण जोहैं। मध्य सुनैना रानी सोहैं।
लिये मोद भरि गोद सुता के। करत पान मुख चन्द्र सुधा के।। 2

ताहि समय सिय मचलि परी है। पय प्यावत नहिं पान करी है।
रोवति अतिसय करि किलकारी। सुता देखि दुख भयो अति भारी।। 3
दासी भेजि सतानन्द आये। रानी गिरि तब चरन में जाये।
बहुते दिनन्हि में सुता अस पाये। कौन अभागिन दृष्टि लगाये।। 4
छिनक विलम्ब विचार कियो जब। आयो हृदय ज्ञान फुरि अस तब।
सुता श्री चन्द्रप्रभा घर जाई। प्रीति दुहूँ की अनादि है माई।। 5
इत उत की दोउ प्रीति एक रस। दशा दुहुँन की भई है एक जस।
चाहति हैं एक संग मिलन को। ताते करो संयोग दुहुँन को।। 6
इतने में एक दासि दौड़ि कै। आइ सुनाई दसा सब रोय कै।
मिलि दोउ रानी एक संग बैठीं। सिया ललकि उत गोद में पैठीं।। 7
चन्द्रप्रभा दोउ सुता गोद भरि। भयो मोद को सकै लेख करि।
मिलि दोउ प्यारी करि किलकारी। लिपटि गई दोउ भुजा पसारी।
देखि कै युगलप्रिया सुख मूलैं। सावन घर मयूर लौ फूलैं।। 8

पद - 18

जै श्री चन्द्रकला अलबेली।
अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि गर्व गहेली।। 1
निमिकुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रिय कारिनि रसकेली।
चन्द्रप्रभा के सुकृत कल्पतरु उमही लता नवेली।। 2
कंचन बन कमला प्रमोदबन लीला लहरि सुझेली।
मोहन यन्त्र बीन स्वर टेरति प्रीतम चित्त बिथैली।। 3

शरणागत पालिनि रस मालिनि चालिनि गजगति हेली।
श्री युगलप्रिया अनुराग सदा सम्बन्ध राग की मेली ।। 4

पद - 19

गावो री बधाइयाँ
चन्द्रकला सुठि कुँवरि प्रगट भई चन्द्रप्रभा छवि छाइयाँ।। 1

लघु कर चरण नासिका मोती नख दुति चन्द्र लजाइयाँ।
निरखति रानी जानि लली अलि युगल प्रिया सुख पाइयाँ।। 2

रेखता पद - 20

घर-घर मंगलचार जनकपुर बरस गाँठ प्यारी चन्द्रकलाजू के।
सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि नव यौवन सब चली डगर के।। 1

कंचन कलश सजे सिर ऊपर दधि दुर्बा अंकुर सुठि नीके।
श्रीचन्द्रप्रभाजू के महल पधारीं भई भीर भारी सब सुख के।। 2

नाचति गावति करत कुतूहल बिसरे काम दाम घर-घर के।
श्रीयुगलप्रिया सुख फूलि गई तब जब देखी प्यारी सखिजू के।। 3

पद 21

जब लहि बाल बरन दुति प्यारी। चन्द्रकला तेहि तन अनुहारी।।
कन्दुक औ भौंरा चकडोरी। सारो मैना मोर चकोरी।।
तूती और कपोत के छौना। पालन करैं दुहूँ निज भौना।।
दोउ के महल ते पक्षी ल्यावें। अपनी-अपनी खेल दिखावें।
मुनियाँ लाल पींजरा ल्याई। दोउ छोड़हिं हँसि देखि लड़ाई।
जब जीती प्यारी की मुनियाँ। लहि उर हर्ष बचन प्रिय सुनियाँ।
तबहीं सोच लही सिय प्यारी। प्रिय की हारि न सकीं सँभारी।।

करि कछु यतन हारि निज भई। हर्ष लहो मणिगण बहु दई।।
तेहि संग युगलप्रिया तहँ रही। लखि लीला अद्भुत सुख लही।।
दोहा– एह विधि के बहु खेल करि, लीला ललित जनाव।
पौगँडहू लहि कुँवरि बर सेवत स्वामिनि भाव।।

पद – 22

श्री चन्द्रप्रभा की मनोरथ बेली सबही विधि सुखदानी।
चन्द्रकला फल रूप प्रगट भई सब सुख सुकृत सकेली।। 1
श्री गौतम मुनि नाम करन कहि, चन्द्रकला अलबेली।
अमित सखी श्री सिय स्वामिनि की, तिनमें मुख्य सहेली।। 2
इनकी कृपा होइहैं जेहि पर, सियपिय ताहि हथेली।
युगल बिहारिनि युगल बिहारी मिलि निशिवासर केली।। 3

पद – 23

जै श्रीचन्द्रकला सुखदाई।
सिय–सियपिय मुख चन्द्रकला की कला अनूप रूप जनु जाई।। 1
चन्द्रभानु श्री चन्द्रप्रभा की, भाग राग नहिं कछु कहि जाई।
मनभावन मन भावनि सिय पिय निगम नेति रस निज घर पाई।। 2
गावत यश मन भावत पावत अंगहि अंग उमंग बढ़ाई।
लली लाल खुशहाल ख्याल कल कुशला दृग दरसाई।। 3
आर्यवर्य आचार्य सुखद प्रभु श्रीप्रीतिलता दृढ़ गहि शरनाई।
मुग्ध भाव प्रद युगल बिहारिनि सबही बिधि लीजै अपनाई।। 4

पद – 24

चन्द्रप्रभाजु की सुकृत सुबेली। चन्द्रकला फरि–फल अलबेली।
जनकलली श्री अवध ललाजू की इनकी कृपा रहस जग फेली।। 1
अमित अली रस पली भली विधि अष्टयाम सेवा सुख देली।
भाव भरत भाविक मानस रस युगल बिहारिनि युगल सुकेली।। 2

सोहद पद – 25

चन्द्रभानु जी के द्वारे सुनौबति बाजहिं हो।
ललना सुनि–सुनि नगर हुलास सुमंगल साजहिं हो।। 1।।
वीथिन सड़क सुचौक अथाई हाटहिं हो।
ललना मन्दिर कोटि के द्वार चहूँदिशि ठाटहिं हो।। 2।।
बन्दन माल वितान कलश धरि दीपहिं हो।
ललना रम्भा पूग रसाल सफल तरु रोपहिं हो।। 3।।
चामर ध्वज सुपताक साथियाँ सोहैं हो।
ललना चित्र–विचित्र बनाय रूप मन मोहैं हो।। 4।।
दधि दुरबा फल फूल सु अंकुर नीके हो।
ललना कनक सुथारन साजि धरे प्रिय जी के हो।। 5।।
नारि सिंगार सँवारि कलश सिर धरिकै हो।
ललना कर लिये मनिमय थार आरती सजिकै हो।। 6।।
सात कोट के द्वार सुपरितह प्रविसहिं हो।
ललना जाय लली अली देखि चरण कर परसहिं हो।। 7

गाय मधुर स्वर सोहिलो साज बजावहिं हो।
ललना विविध स्वाँग करि नटहिं देखाय सुभावहिं हो।। 8

देव विमाननि आय महोत्सव देखहिं हो।
ललना बरसत सुरतरु सुमन भाग निज लेखहिं हो।। 9

चन्द्रभानुजू के पुण्य सुभाग सराहहिं हो।
ललना पराभक्ति रस रूप भाव हिय चाहहिं हो।। 10

चन्द्रकला जू के जनम जो मंगल गावहिं हो।
ललना महल टहल निज रूप दिव्य सो पावहिं हो।। 11

ललना प्रेम सहित रस 'मोद' बहिनि के सेवहिं हो।
ललना प्रीतम हाथ बिकाहिं अपनपौ देवहिं हो।। 12

पद – 26

प्रगट सखी चन्द्रकला सुखदानी।
तिरहुत देश जनकपुर सुन्दर कञ्चन मय रजधानी।। 1
माधवमास शुक्ल संभू तिथि रितु बसंत छवि सानी।। 2
चन्द्रभानु पितु मातु सुकृत तन चन्द्रप्रभा महारानी।। 3
सियजू की जे मुख्य सहेली तिन सब में महारानी। 4
प्रेम मोद रसराज भाव प्रद वत्सलादि गुणखानी।। 5

पद – 27

रंग भीनी बधाई बाजै री।
चन्द्रभानु के कुँवरि प्रगट भई गोर वरन छवि भ्राजै री।। 1
जनक नगर सब डगर बगर में फैलि रह्यो रस राजै री।। 2
प्रेम मोद सिय पिय मन भावन अलिगण में सिरताजै री।। 3

पद – 28

चिरजीवौ सदा चन्द्रभानु लली।
रसिकन को अति सुख बरसावैं दरसावैं रस रंग गली।। 1
सुख सुहाग दिन-दिन अति बाढ़ैं नैहर सासुर रंगरली।। 2
प्रेम मोद सिय पिय छवि छाके जिमि भँवरी लहि कमल कली।। 3

पद – 29

जै श्री चन्द्रकले गुण ऐनी।
अतिसय प्रिय श्री जनक लली की प्रीतम हिय निवसैनी।। 1
निन्दति निज छवि मदन विलासिनि मृगनैनी पिक बैनी।। 2
रास रहस कल केलि प्रबीनी सिय प्रीतम रस दैनी।। 3
सेवन, हित रसराज युगल पद आस लगी दिन रैनी।। 4

पद – 30

जै सर्वेश्वरी चन्द्रकला जू।
सिय स्वामिनि की सकल शक्ति मधि तुमहिं शिरोमणि रस सो रला जू।। 1
प्रियता की परिपात्र पिया को तुम बिनु की कोउ अपर भला जू।। 2
सेवति सोइ सिय पिय पद पंकज जो आश्रित सब मान दला जू।। 3
लहि रसराज आचार्य आपसों मुदित रहत नित प्रीति पला जू।। 4

पद – 31

अब मोहिं चन्द्रकला जू की आसा।
श्री जनकलली जू की मुख्य सहेली बिहरत सकल बिलासा।।
चौरासी भ्रम फन्द छुड़ा के रसिकन सँग दिय बासा।
श्रीयुगलप्रिया अब नहिं कछु संसय बिपिन प्रमोद निवासा।।

श्री चारुशीला जी की बधाई

पद – 1

बधइयाँ गुइयाँ हिलमिल गावो राज।
चन्द्रकान्तिजू की कोख सिरानी, सुता सुजनमी आज।। 1
शत्रुजीत नृप देत मुदित मन, पट भूषन गज बाज।। 2
हरषि बोलाय, याचकन, गुनिजन, विदुषन विप्र समाज।। 3
श्री 'बालअली' नौबत धुनि बाजहिं, जनु सावन घन गाज।। 4

पद – 2

लखो री मिथिला मोद भरी।
माधव शुक्ल पक्ष पूरन तिथि, वासर चन्द्र धरी।। 1
चित्रा नखत लगो धनि–धनि वह, धन्य सो धन्य घरी।। 2
रानी चन्द्रकान्ति नृप अरिजित, सुकृत की बेलि फरी।। 3
जनमी चारुशिला जू जिनकी, चन्द्रअली अनुचरी।। 4

पद – 3

माधव मास पूर्ण तिथि के दिन मंगल मुद सरसाई।
जनकनन्दिनी की प्रिय सहचरि चारुशिला श्रुति गाई।। 1
रूपराशि सब अंग मनोहर, दुति दामिनि अधिकाई।
बरषैं कुसुम देव मुनि हरषैं, नभ दुन्दुभी बजाई।। 2
निमिकुल बिदित शत्रुजित नृप घर, सुता भई सुखदाई।
शुभ लक्षण रेखा युत कर पद, कोमलता अधिकाई।। 3
वीणाधर तेहि समय आय सब, पूरन कथा सुनाई।
बढ्यो मोद पुरजन परिजन उर, सोहिलो गावत आई।। 4

न्यौछावरि करि करति आरती, निरखत ललित लोनाई।
पूजे देव विप्र परितोषे, सम्पति सकल लुटाई ।। 5

जै जै चन्द्रकान्ति महारानी, सुरतिय बदति सुहाई।
रमा-उमा सेवत पद जाके, सो तेरे घर आई ।। 6

चौके रचीं सुगजमनि द्वारे, मंगल कलश धराई।
बन्दनवार नवीन कलश ध्वज, पुरी परम छवि छाई ।। 7

नभ अरु नगर निशान गान धुनि, विप्र वेद समुदाई।
'रसिकअली' मुद अधिक आजु सिय, जनमत दिवस जनाई ।। 8

पद - 4

गावो री सहेली मंगलचार।
जनम गाँठ श्री चारुशिलाजू की, नाचो गावो सजि शृंगार ।। 1
माधव मास पूर्ण पूरण तिथि, बार भौम सब योग उदार ।। 2
वेद विदित निमिवंश प्रगट भई, रूप भरी गुणशील अपार ।। 3
सियजू की प्रिय सखी अधिक हित, गावति गुन जाके श्रुतिचारि ।। 4
'रसिकअली' ताकी लघु भगिनी, सेवत चरण कमल सुखसार ।। 5

पद - 5

बजत बधाई रसिकन के घर, प्रगटी चारुशिला अलि स्वामिनि ।।
परमा प्यारी जनकललीजू की, रसिक सिरोमणि के वरभामिनि ।।
अधिष्ठातृ रति रहस रीति की, प्रीति परा आदिक अनुगामिनि ।।
नृत्य गान रसखान कलाकल, सरस सुरुचि सुचि रस के धामिनि ।।
मोहनि मन मति गति सो पियके, सबही विधि सो हिय अभिमानिनि।

छवि सिंगार अपार सु गुनगन, नवल अंग दुति दमकत दामिनि ।।
अलि रसराज आचार्य कृपाते, छिटकी छटा शरद की सी जामिनि ।

पद – 6

आज बधाई रंग भरि बाजी घनमण्डल लो गाजी री।
सत्रुजीत नृप के दरवाजे, अनुपम शोभा साजी री।।
चन्द्रकीर्तिजू की सुकृत बेलि फली चारुशिला रसराजी री।। 1

रसिकन उर भरि भाव भली विधि, आचारज पद भ्राजी री।
सुषमा सरस सिंगार प्रदरसी मंजुल नव छवि छाजी री।। 2

लखि रति रमा उमा ब्रह्मानी, पर परत्व तजि लाजी री।
चतुर चारु चूड़ामणि जिनके, नित परबस रस राजी री।। 3

पद – 7

बाजत बहु विधि बिशद बधाई।
सत्रूजित नृप के महलनि में, अनुपम आनन्द छाई।। 1
शक्ति शिरोमणि सहचरि पिय के, चन्द्रकान्ति जू जाई।। 2
जुरि–जुरि सखिन सोहिलो गावति, आनँद उर न अमाई।। 3
प्रेम–प्रभा फैली रस परतम, रति रसराज सुहाई।। 4
रसिक जनन के जीवन रूपा, भाव उरसि अधिकाई।। 5

पद – 8

करु मन चारुशिला पद आस।।
पाद–पद्म की आस करत ही, छूटत जम की त्रास।। 1
श्री चारुशिला आचराज सबको, सर्वेश्वरी प्रकास।। 2